भूमिका

संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-विभाग की ओर से कन्या-पाठशालाओं की प्रारम्भिक कक्षाओं के लिये पाठ्य पुस्तकों की योजना की गई है और उनका पाठ्य-क्रम भी निर्धारित कर दिया गया है। इसी के अनुसार इस सीरीज़ की रचना की गई है। इस सीरीज़ में निम्नलिखित बातों पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है:

पहले और दूसरे भाग के पाठ सरल और बोलचाल की भाषा में लिखे गये हैं और तीसरे और चौथे भाग के पाठों में मुहाविरों का प्रयोग किया गया है। पाठ ऐसे चुने गये हैं जिनका जानना नगर और गाँव दोनों प्रकार की बालिकाओं के लिये रुचिकर और आवश्यक है।

प्रत्येक भाग में छोटी छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, [illegible] आधुनिक आविष्कार, [illegible] पाठ दिये गये हैं। [illegible]

[illegible]

[illegible]

नहीं है। इसके अतिरिक्त कक्षाओं में लड़कियों की कमी होने के कारण अध्यापिकाओं को दो-दो तीन-तीन कक्षाओं को एक साथ पढ़ाना पड़ता है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक भाग में उतने ही पाठ दिये गये हैं जितने कि वे वर्ष भर के अन्दर पढ़ा सकें। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिये प्रश्न भी दे दिये गये हैं। वे उनके लिए केवल पथ-प्रदर्शक हैं, पर्याप्त कदापि नहीं हैं। इस सीरीज़ की छपाई में टाइप, काग़ज़ और चित्रों के चुनाव में विशेष रूप से ध्यान दिया गया है।

अध्यापिकाओं के प्रति निवेदन

अध्यापिकाओं को चाहिए कि किसी पाठ का पढ़ाना आरम्भ करने के पहिले उस पाठ से सम्बन्ध रखने वाली कोई रोचक कहानी बालिकाओं को सुनावें जिससे उनका चित्त पढ़ने की ओर आकर्षित हो। फिर पाठ के चित्र पर थोड़ी सी बातचीत करते हुए उस पाठ के शब्दों का प्रयोग करें। इस तरह जब पाठ का सार लड़कियों की समझ में आ जाय तब वे उनसे पुस्तक खोलने के लिए कहें। बालिकाओं के पुस्तक खोलने पर अध्या-पिका को चाहिए कि वह स्वयं थोड़ा सा नमूने के तौर पर पढ़कर उनको सुनावें, इसके पश्चात् कक्षा की तेज़ लड़कियों से उस पाठ को पढ़वावें और उसके बाद दूसरी लड़कियों से पढ़वावें। उनके उच्चारण की ओर विशेष रूप से ध्यान रक्खें और साथ ही साथ उनकी अशुद्धियों को दूर कराती जावें। कठिन शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिखकर उनका ध्यान आकर्षित कर देना चाहिए और उनके वाक्यों में प्रयोग करके अर्थ समझा देना चाहिए। पाठ के अन्त में दिये हुए प्रश्नों और इसी तरह के दूसरे प्रश्न द्वारा बालिकाओं की बुद्धि की परीक्षा लें।

वाद विवाद और [illegible] [illegible] है [illegible]

अधिक शिक्षा-प्रद और रोचक होगा और इससे लड़कियों को बोलने का शीघ्र अभ्यास हो जायगा ।

भूगोल-सम्बन्धी पाठों को मानचित्र द्वारा पढ़ाना अधिक उपयोगी होगा ।

स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी पाठ पढ़ाते समय मैली और साफ़ लड़कियों को दो टोलियों में चुनकर उस पाठ की उपयोगिता उन लड़कियों के चित्त पर बातचीत द्वारा जमा दें । घास, ख़रबूज़ा, दियासलाई इत्यादि के पाठ पढ़ाते समय अध्यापिकाओं को चाहिए कि उन चीज़ों को सामने रख कर लड़कियों को उस पाठ को समझा दें ।

विषय-सूची

चित्र-सूची

चित्र	पृष्ठ
१—झरना	१३
२—वीराङ्गना देवी जोन	१४
३—नल-दमयन्ती	२८
४—सर सैयद अहमद खाँ	५६
५—बीमारी का घर	६०
६—हवादार कमरा	६३
७—घड़ी	६४
८—विज्ञानाचार्य डाक्टर जगदीश चन्द्र बसु ...	९४
९—बेतार के तार के आविष्कर्ता मार्कोनी ...	१०६
१०—बेतार के तार के खम्भे ...	१०७
११—रेशम के कीड़े	१३०
१२—लन्दन को डाक ले जाने वाला हवाई जहाज़	१५०

बाला-बोधिनी

चौथा भाग

—○—

१—प्रभु का दर्शन

(१)

पूजन प्रेम नेम से जिनकी,
कल्पित-प्रतिमा का मैंने।
रह कर मौन किया था अपने,
मन-मन्दिर में ही मैंने॥

(२)

आर्य-सुतों से सदा सुना ही-
था जिनका शुभ पावन नाम।
थी अभिलाषा सदा कि देखें,
जिनकी मंजुल मूर्ति ललाम॥

२—सत्यपरायणता (१)

महाराज हरिश्चन्द्र को मृगया खेलने का बड़ा चाव था। आपको जभी अपने राजकाज से अवकाश मिलता था, तभी मृगया खेलने के लिए चल दिया करते थे। हरिश्चन्द्र का यह दृढ़ सिद्धान्त था कि—

"चन्द्र, टरै, सूरज टरै,
टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ़व्रत हरिश्चन्द्र को,
टरै न सत्य विचार॥"

अस्तु, इसी से लोग समझ सकते हैं कि वे कैसे दृढ़प्रतिज्ञ और सत्यपरायण पुरुष थे। एक दिन महाराज हरिश्चन्द्र आखेट खेलने के लिए वन में गये और एक बनैले सुअर का पीछा करते करते वे एक सघन वन में जा पहुँचे। वहाँ पर उन्हें किसी के बिलख बिलख कर रोने का शब्द सुनाई पड़ा। उसी शब्द के आधार पर वे वेग से दौड़ कर उसी स्थान पर जा पहुँचे जहाँ से वह रोने का शब्द आ रहा था। वहाँ वे क्या देखते हैं कि एक ऋषि की [illegible] कई एक स्त्रियाँ एक पेड़ से बँधी हुई रो रही हैं। हरिश्चन्द्र को देखते ही वे कहने लगीं कि महाराज हमारी दीन दशा

इच्छा न पूरी हुई। इसलिए वे बोले कि इतने बड़े दान की दक्षिणा ७ करोड़ मोहरें अभी मिलनी चाहिए।

यह सुनकर महाराज हरिश्चन्द्र बहुत घबड़ाये। इस ऋण के चुकाने की चिन्ता ने उन्हें घर दबाया। उन्होंने सोचा—खजाने में इससे सैकड़ों गुना अधिक स्वर्ण भरा हुआ है; किन्तु वह तो मेरा है नहीं, क्योंकि मैं तो सर्वस्व दान कर चुका हूँ। बहुत देर तक सोच विचार करने के पीछे राजा ने कहा "महर्षि! आप मुझ पर दया करके मुझे एक महीने का समय दीजिए, जिसमें मैं परिश्रम से धन पैदा करके, इस ऋण से उऋण हो सकूँ।"

विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र को एक मास का समय तो दिया, किन्तु यह भी कह दिया कि जिस तरह हो तुमको एक महीने में दक्षिणा अवश्य ही देनी होगी। अब हमारे राज सिंहासन को छोड़ कर तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, जाओ। इतना कह कर विश्वामित्र चले गये। इधर महाराज हरिश्चन्द्र ने भी महर्षि विश्वामित्र के आज्ञानुसार उसी रात को बिना किसी से कहे सुने, स्त्री पुत्र सहित, काशीपुरी की ओर चल दिये।

राजा हरिश्चन्द्र काशी में आकर बहुत दुःखी हुए। यथासाध्य चेष्टा करने पर भी वे मोहरों का कोई प्रबन्ध न

कर सकें। अन्त में ऋण चुकाने की तिथि भी आ गई। लाचार महाराज हरिश्चन्द्र अपनी स्त्री शैव्या को साथ लेकर काशी के बाजार की सड़कों पर यों चिल्ला कर कहते जाते थे—"किसी को दास दासी मोल लेना हो तो लो।" उस समय एक बुड्ढे ब्राह्मण ने आकर तीन करोड़ मोहरें देकर रानी शैव्या को मोल ले लिया। जिस समय ब्राह्मण रानी शैव्या को लेकर चला, उस समय राजपुत्र रोहिताश्व अपनी माँ को नहीं छोड़ना चाहता था और पल्ला पकड़ कर रोने लगा। इस पर शैव्या ने बड़ी दीनता के साथ उस ब्राह्मण से कहा—"क्या आप इस बालक को संग ले चलने की मुझे आज्ञा देंगे? आपको इसके भोजनादि का प्रबन्ध नहीं करना पड़ेगा। आप जो मुझे देंगे हम दोनों उसी में अपना निर्वाह कर लेंगे।"

ब्राह्मण ने यह बात स्वीकार कर ली और महारानी शैव्या दासी बन कर रोहिताश्व को लिये रोती हुई ब्राह्मण के आश्रम में पहुँची।

इधर महाराज हरिश्चन्द्र शेष चार हजार मोहरों के चुकाने के लिये अपने को बाजार में इधर उधर बेचने के लिए फिरने लगे। अन्त में एक चाण्डाल ने आकर चार हजार मोहरें देकर उन्हें भी मोल ले लिया

प्रसन्न होकर, साक्षात् भगवान् ने वहीं दर्शन दिये और अमृत द्वारा रोहित को भी प्राण दान दिया।

महाराज हरिश्चन्द्र का अद्भुत सत्यानुराग देख कर विश्वामित्र ने इनके राज्य को भी आशीर्वाद देकर लौटा दिया। ऐसे भयानक समय में सत्य के पथ पर अटल रह कर महाराज हरिश्चन्द्र के सत्य की महिमा यह घोषणा कर रही है—"सत्य ही की विजय होती है।"

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों का अर्थ बतलाओ—धर्म-परायण, धैर्य, दासत्व और अनुमान।

२—इन शब्दों के भिन्न भिन्न अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो—'धार', 'कर'।

३—'जिसके पैर न फटे बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई'—इसको विस्तृत रूप से समझाओ और एक उदाहरण दो।

४—वाक्य बनाओ—मन डोल गया, इकलौता पुत्र।

४—बड़ी बूढ़ियों का सम्मान

आदमी के हाथ में सदा पाँच ही उँगलियाँ होती हैं। एक बार चार उँगलियों में बहुत एका हो गया। वे चारों

आपस में हिल-मिलकर रहतीं, और कहा करतीं कि देखो अँगूठा सब से अलग है। यह बुढ़िया है, कुरूप है; पेट भी इसका मोटासा निकल आया है। यह बुढ़िया इस दुनिया से हट जाती, तो बहुत अच्छा होता। न मालूम इसे क्या लत पड़ गई है कि हम चारों जब कोई काम करने लगती हैं, तो यह भी धम से बीच में आकर कूद पड़ती है। इसे तो घर से निकाल देने की जुगत सोचनी चाहिए।

अँगूठे ने एक दिन चारों उँगलियों की बातें कहीं से सुन लीं। उसने कहा—बेटियो, क्यों तुम्हारी मति मारी गई है? क्या बूढ़े होने ही से लोग दुनिया में बोझ से हो जाते हैं? तुम सब ने गलत समझा है। झूठ-मूठ का घमंड अच्छा नहीं। एक दिन भी मैं न सँभालूँ, या तुमको न समझाऊँ तो तुम्हारा सब काम चौपट हो जाय।

इस पर छोटी उँगली ने तड़क कर कहा—[illegible] [illegible] हमारा [illegible] [illegible] है।

[illegible]

ठहर न रुके मैं लवलेश,
कौन लिये जाते संदेश ?

बाधाओं से भिड़ भिड़ जाना,
इतना नहीं, नहीं भय खाना।

पाठ तुम्हीं से सीखा झरना
कर्मक्षेत्र में बढ़कर मरना

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—झरने से हम क्या पाठ सीखते हैं ?
२—जयलेश, कर्मक्षेत्र, पथिकों का अर्थ करो।

६—वीराङ्गना देवी जोन

वीर बालिका जोन ने, आज से कोई ५०० वर्ष पहले, फ्रांस देश के लॉरेन भाग के एक छोटे से गाँव डुमरिम में एक मामूली किसान के घर जन्म लिया था। उन दिनों फ्रांस की हालत दिन बदिन बिगड़ रही थी। फ्रांस निवासी ईर्षा के मारे एक दूसरे के रक्त के प्यासे होकर केवल आपस ही में न झगड़ते थे, वरन् कुछ लोग अँगरेजों से भी जा मिले थे। अँगरेजों ने भी फ्रांस को ले लेने के लिए उस पर चढ़ाई कर दी थी।

गरीब होने के कारण यद्यपि जोन को स्कूल में

पढ़ने का मौका नहीं मिला, परन्तु उसने घर पर ही अपनी माँ से सदाचार, धर्म और त्याग की अनूठी शिक्षा प्राप्त कर ली। बचपन में जोन की हालत अनोखी ही थी। वह अकेली बैठ कर घंटों तक बड़े चाव से हरी हरी घास, आकाश और पहाड़ों की मन को प्रसन्न करने वाली शोभा देखा करती थी। माता-पिता के बहुत कुछ कहने पर भी उसने क्वाँरी रह कर अंगरेज़ों के हाथ से अपने देश को मुक्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था।

गर्मी के दिनों में एक दिन सन्ध्या समय जोन धर्म मन्दिर के बाहर खड़ी थी। उसके कानों में अचानक यह आवाज़ आई "जो तू बड़ी वीर है, तो जा अपने बादशाह को लेकर दुश्मनों से लड़। तेरे ही हाथ से फ्रांस स्वतन्त्र होगा।" फिर क्या था वह झट से घर पहुँची। उसने अपने माता-पिता से आकाशवाणी की चर्चा की और दुश्मनों के साथ लड़ने का विचार भी प्रकट किया। जोन का यह विचार सुन कर माता तो बड़ी प्रसन्न हुई, परन्तु पिता ने उसे बहुत धमकाया। जोन इन धमकियों से अपने दृढ़ संकल्प से कब डिगनेवाली थी! वह अपना घर छोड़ कर राज के पास जाकर रहने लगी। वहाँ से वह फ्रांस के अधिकार

'डफ़िन' के पास पहुँची और ईश्वर के भेजे हुए संदेश की चर्चा की और बहुत कुछ बहस के बाद 'डफ़िन' को अपने विचार से सहमत कर लिया।

फिर क्या था पहले पहल जोन शत्रुओं से लड़ने के लिए सेना ले ओरलिन्स नगर पहुँची। पहले तो उसने व्यर्थ की मारकाट बचाने के लिए उनसे सुलह करनी चाही, परन्तु जब वे सुलह करने पर राज़ी न हुए तो वीराङ्गना जोन ने उन पर हमला किया और अपनी वीरता से उनके दाँत खट्टे कर दिये। इस बीच में एक सनसनाता हुआ बाण जोन की गर्दन में आकर लगा। जोन ने बड़े साहस से गर्दन से बाण खींच लिया और ज़ख़्म पर ख़ुद ही पट्टी बाँध ली और फिर लड़ना शुरू कर दिया। उसने शत्रुओं से बहुत से क़िले वापिस ले लिये। इसके बाद पेरिस की लड़ाई में लड़ते लड़ते वह शत्रुओं के हाथ पड़ गई। उसके हाथ पैरों में लोहे की जंज़ीरें बाँध कर हवालात में रक्खा गया। कभी कभी उसके हाथ पाँव लोहे के पिंजड़े में बाँधे गये, परन्तु वह अपने इरादे से टस से मस न हुई।

एक वर्ष तक क़ैद में रख कर ९ जनवरी सन १४३१ को जोन का मुकदमा शुरू हुआ। उस पर डाकिनी और

र्म-भ्रष्ट होने का अपराध लगा कर उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी गई।

सचमुच वीराङ्गना जोन जैसी बालिकाएँ ही किसी देश का गौरव स्थिर रख सकती हैं।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—ईर्षा, अनूठी, दृढ़-संकल्प, स्वतन्त्रता, वीराङ्गना और आकाशवाणी।

२—'रक्त के प्यासे, दाँत खट्टे कर दिये, टस से मस न हुई' इनके अर्थ बताओ और वाक्य में इनका प्रयोग करो।

३—देवी जोन की कहानी संक्षेप में बताओ।

७—गृहलक्ष्मी (१)

सावित्री अपनी ससुराल गई। वहाँ उसे घर का कुल प्रबन्ध अपने ऊपर लेना पड़ा। घर का प्रबन्ध इतना गड़बड़ था कि घर के लोग सुख से निराश हो चुके थे। वे धीरे-धीरे दरिद्र होते जाते थे। बेकारी और आलस्य के कारण घर के बच्चे से लेकर बुड्ढे तक चिड़चिड़े और मलिन स्वभाव के हो गये थे। सावित्रि के माता पिता ने पुराना

और बड़ा घर समझकर उसका विवाह वहाँ कर दिया था
सावित्री वहाँ पहुँचकर देखा कि गली गली भीख माँगने
में अब थोड़ी ही देर है। उसने अपने शरीर के सुख क
विचार छोड़कर पहले घर के प्रबन्ध की ओर ध्यान दिया

*जिस घर का प्रबन्ध अच्छा होता है उसमें रहने वाले
सुख पाते हैं और जिस घर का प्रबन्ध ठीक नहीं रहता
उसमें रहने वाले रोगी, दरिद्र और आलसी बने रहते हैं।*

इसलिये वह घर को सुखी बनाने में तत्पर हुई। वह
बहुत सवेरे उठती थी। उसका सबसे पहला काम यह थ
कि दरवाज़ों और खिड़कियों को खोल देती, जिससे प्रकाश
और शुद्ध वायु घर के भीतर आ सके। फिर बिछौने को
लपेटकर धूप में रख देती। ऐसा करने से बिछौने अधिक
साफ़ रहते हैं और उन पर सोने वालों को बीमारियाँ क
होती हैं। इसके पश्चात् वह घर में झाड़ू लगाती। यह प्रति
दिन का काम था। फ़र्श पर कहीं कूड़ा-करकट न रहने देती
और दीवारों पर से भी जालों और धूल को झा
देती थी। सप्ताह में दो एक बार फ़र्श भी लीप डालती थी
झाड़ू सब जगह पर लगाती। ऐसा नहीं कि खुली जग
में तो झाड़ू लगा दिया और खाट के नीचे पड़ा ही पड़ा
रहने दिया। दरी या चटाई जहाँ बिछी होती, उनको उठाक

झाड़ लेती और उस स्थान पर झाड़ू लगाकर ज़रूरत होती तो उनको फिर वहीं बिछा देती थी।

फिर वह रसोई-घर की ओर ध्यान देती। रसोई-घर की दीवारों को पहिले साफ़ करके, फिर धरती को बुहारकर, पक्की ज़मीन को पानी से धोकर और कच्ची को गोवर-मिट्टी से लीप डालती थी। वह पढ़ चुकी थी कि रसोई-घर को बहुत साफ़ रखना उचित है; आसपास कहीं गड्ढे न हों जिनमें पानी जमा हो जाता हो और उसमें पड़कर चीज़ें सड़ जाती हों। क्योंकि इससे बीमारी फैलती है। शुद्ध और पवित्र स्थान में भोजन करने से मन बहुत प्रसन्न होता है।

फिर उसने बरतनों की सफ़ाई पर ध्यान दिया। वह प्रत्येक बर्तन को माँजकर चमका देती थी। उनमें कहीं मैल न लगा रह जाता था। फिर उनको साफ पानी से धो डालती थी। अच्छी तरह माँजकर साफ़ किये हुए बर्तन में खाने-पीने से चित्त बड़ा प्रसन्न होता है। मैले-कुचैले बर्तनों को देखते ही घृणा आती है. उनमें खाने पीने से रोग पैदा होने का भय रहता है। वह बर्तनों को धोकर और पोंछकर किसी शुद्ध स्थान पर रख देती थी।

फिर घर की और चीज़ों की तरफ़ ध्यान देकर वह कपड़ों को उठाकर खूंटी पर या अलगनी पर रख देती।

इधर उधर धरती पर कोई कपड़ा व्यर्थ पड़ा नहीं रहने देती थी। जो कपड़े मैले हो जाते उनको एक स्थान पर इकट्ठा करती जाती और धोबी के आने पर उनको धोने के लिए दे देती या अवसर मिलने पर स्वयं धो लेती थी। फिर धरती पर पड़ी हुई प्रत्येक चीज़ को उस स्थान पर रख देती जो उसके लिए नियत थी। जो चीज़ें काम की नहीं थीं और व्यर्थ बाहर पड़ी रहती थीं, उनको उठा कर सन्दूक में बन्द करके रख देती थी। लकड़ी की सन्दूक को धरती पर नहीं रहने देती थी, क्योंकि उसे दीमक लग जाएगी। उसके नीचे चारों कोनों पर चार ईंटें रखकर तब उन पर सन्दूक रखती थी।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर वह उस घर में जाती जिसमें खाने-पीने का सामान रक्खा रहता और जिसे कोठार या भंडार कहते हैं। वह खाने पीने की प्रत्येक चीज़ को देखती कि कोई चीज़ बिगड़ तो नहीं गई है? किसी [illegible]

वह खाने पीने का सामान कम से कम एक महीने के लिए एक साथ ही मँगाकर रख लेती थी। क्योंकि वह जानती थी कि रोज़ रोज़ खरीदने से दाम भी अधिक लगता है और बड़ा झंझट रहता है। गेहूँ, चावल, दाल, नमक, शक्कर, मसाला, घी और तेल आदि चीज़ें घर में वह सदा तैयार रखती थी। जिन जिन बर्तनों में चीज़ें रक्खी रहती थीं, उनको वह अच्छी तरह ढक देती थी। क्योंकि उनको खुला रख छोड़ती तो चूहे समाप्त कर देते।

भोजन बनाने के समय भंडार-घर में से वह जो चीज़ें निकालती, उनको वह ज़मीन पर छिटकने नहीं देती थी। क्योंकि उनको खाने के लिए चूहे आ जायँगे। जहाँ तक होता वह ऐसा उपाय करती कि घर में चूहे न रहने पावें। वह सोचती थी कि चूहे बहुत रोग फैलाते हैं। भंडार-घर में बड़ी स्वच्छता चाहिए। नहीं तो खाने पीने की सब चीज़ें मैली और गंदी हो जायँगी। प्रतिदिन के खर्च से जो चीज़ें बच जातीं, उनको संभाल कर वह भंडार-घर में रख देती थी। चीज़ों के रखने में वह इस बात का सदा ध्यान रखती कि जो चीज़ जहाँ की हो उसे उसी स्थान पर रखना चाहिए। ऐसा करने से चीज़ें जल्दी मिल जाती थीं और काम का हर्ज भी न होता था।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—वाक्य बनाओ—घिड़घिड़े होना, मैले-कुचैले, कूड़ा-करकट।

२—सावित्री घर की सफ़ाई के लिए क्या करती थी ?

३—घर का प्रबन्ध ठीक होने से क्या फल होता है ?

८—विद्या

विद्या सम गुण जगत में
और न दूजा कोय।
सीखे तें जाके सदा
अति अद्‌भुत सुख होय॥ १॥

धन से विद्या-धन बड़ो
रहत पास सब काल।
देय जितो बाढ़ै तितो
छीन न लेय नृपाल॥ २॥

जो कोई सीखत नहीं
विद्या चित्त लगाय।

वह नर इस संसार में
पशु सदृश हो जाय ॥ ३ ॥

विद्या धन उद्यम विना
कहौ जु पावे कौन ।

विना डुलाये ना मिलै
ज्यों पंखा की पौन ॥ ४ ॥

सरस्वति के भंडार की
बड़ी अपूरब बात ।

ज्यों खर्चे त्यों त्यों बढ़ै
विन खर्चे घटि जात ॥ ५ ॥

विन विद्या के होय न बुद्धि ।
मन की होती कभी न शुद्धि ॥ ६ ॥

विन विद्या नहि आदर पावै ।
जीवन सभी व्यर्थ हो जावै ॥ ७ ॥

विद्या सम न त्रिपुर धन कोइ ।
देव सिहात गुणी नर जोइ ॥ ८ ॥

विद्याहीन न सन मग पावै ।
भूप सभा नहि सुजन कहावै ॥ ९ ॥

काम आने वाली चीज़ें और मसाले की शीशियाँ वह उसी पर रखती थी। कभी कभी भंडार-घर की चीज़ें निकाल कर वह उन्हें धूप में रख दिया करती थी और भंडार-घर को झाड़-बुहार कर और लीप-पोत कर साफ़ कर दिया करती थी। ऐसा करने से भंडार-घर की चीज़ों के बिगड़ने का भय नहीं रहता था। वरसात के दिनों में वह महीने में एक वार भंडार-घर की चीज़ों को धूप में अवश्य रख देती थी। जिससे सील के कारण उनमें कीड़े न पड़ जायँ।

खर्च की गुञ्जायश देखकर चौका-वर्तन के लिए उसने एक दासी भी रखवा लिया। वह प्रतिदिन उसके कामों की जाँच करती थी कि वह ठीक काम करती है या नहीं। परन्तु रसोई और भंडार-घर का प्रवन्ध वह अपने ही हाथ में रखती। दासी रखने से उसको जो समय की वचत होती थी उसे वह व्यर्थ न जाने देती थी। उस समय वह घर के बाल-बच्चों की सफ़ाई पर ध्यान देती, बच्चों को नहला धुला कर साफ़ कपड़े पहना देती और उन्हें कुछ कलेवा करा देती थी।

घर की सफ़ाई से फ़ुरसत पाकर स्नान करती और फिर भोजन बनाने में लग जाती थी। भोजन बनाने की कला में निपुण होने से वह थोड़े ही व्यय में बहुत स्वादिष्ट

भोजन तैयार कर लेती थी। घर के छोटे बड़े सब लोगों को खिला पिलाकर तब वह भोजन करती थी।

वह अपनी आय और व्यय का पूरा हिसाब रखती और मासिक आय में से महीने के अन्त में कुछ ज़रूर बचा लेती थी। वह जानती थी कि आय से अधिक व्यय करना गृह-प्रबन्ध में बड़ा हानिकारक है। ऐसा घर शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है जहाँ व्यय अधिक और आय कम होती है। आय-व्यय का हिसाब प्रतिदिन लिखते रहना चाहिए। यदि आय कम हो तो भोजन के ऐसे पदार्थ मोल लेने चाहिए जो कम दाम में मिल सकें। बहुत से भोजन के पदार्थ ऐसे हैं जो सस्ते भी हैं और पुष्टिकारक भी। कपड़े ऐसे बनवाने चाहिए जो मज़बूत हों और अधिक दिन तक चल सकें। मोटा सूती कपड़ा बड़ा उपयोगी होता है। घर के कामकाज से वह कुछ समय निकाल लेती और उस समय में मैले कपड़ों को स्वयं धो लिया करती थी, इससे धोबी को दिये जाने वाले पैसे बच जाते थे। जब वह घर के कामों से छुट्टी पाती, तब व्यर्थ न बैठी रह कर कुछ सीने पिरोने का या महीन कपड़ों में बेल बूटे काढ़ने का काम करती रहती थी। उसमें दिल-बहलाव भी होता रहता और कुछ धन का लाभ भी हो जाता था। अवकाश

के समय में वह घर के कपड़े आपही सी लिया करती, इससे दर्ज़ी को दिये जाने वाले पैसे बच जाते थे। मतलब यह कि जिस तरह से आय अधिक और व्यय कम होता वह वैसा ही प्रबन्ध करती थी। जिस वस्तु की आवश्यकता न होती उसे वह कभी न ख़रीदती। वह घर के छोटे बड़े सब लोगों को प्रसन्न रखती। कोई खाने की नई चीज़ बनाती तो थोड़ा थोड़ा सब को देती।

सावित्री ने लगातार परिश्रम करके घर के सब काम-काज को हाथ में कर लिया। उसे अब पहले के समान परिश्रम नहीं करना पड़ता। घर में स्वच्छता देखकर घर वालों के मन भी स्वच्छ हो गये। उनकी सुस्ती और स्वभाव का मैलापन जाता रहा। सब कुछ न कुछ काम करने लगे। सावित्री के सुशील और मिलन-सार स्वभाव से अड़ोसी पड़ोसी भी प्रसन्न रहने लगे। जो पहले लोग इस घर की बरबादी का स्वप्न देखा करते थे, वही अब सब इसका कल्याण सोचने लगे। इस प्रकार सावित्री ने सब को सुखी करके अपना सुख प्राप्त किया।

सावित्री ने अपने सद्गुणों से उजड़ते हुए घर को फिर सुख-शान्ति से पूर्ण कर दिया। उसके गुणों पर

मोहित होकर घर और गाँव के लोग उसे गृहलक्ष्मी कहने लगे।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—(अ) इन शब्दों के अर्थ बताओ—निपुण, स्वादिष्ट और पुष्टिकारक।

(ब) वाक्य बनाओ—गृहस्थाश्रम, अड़ोसी-पड़ोसी, परचाही, दिल बहलाव।

२—सावित्री के गाँव वाले गृहलक्ष्मी क्यों कहने लगे ?

३—सावित्री की कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

४—सावित्री की प्रतिदिन की दिनचर्या संक्षेप में अपनी भाषा में लिखो।

१०—महारानी दमयन्ती (१)

विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री का नाम दमयन्ती था। वह बड़ी सुन्दरी और गुणवती थी। जब वह विवाह योग्य हुई तब, उस समय की प्रथा के अनुसार, स्वयंवर रचा गया। देश देश के राजा उस स्वयंवर में उपस्थित हुए। उनमें निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र

नल भी थे। नल बड़े वीर, धर्मात्मा और सुशील थे। दमयन्ती उनके गुणों की प्रशंसा पहले ही सुन चुकी थी। उसने स्वयंवर सभा में नल के गले में जयमाल डाल दिया।

निषध देश में आकर दोनों बारह वर्ष तक बड़े आनन्द से रहे। इसी बीच में उनके एक पुत्र और एक कन्या हुई।

राजा नल यद्यपि बड़े बुद्धिमान और धर्मात्मा थे, परन्तु उनमें एक दोष था कि वे जुआ खेलने के बड़े व्यसनी थे। इस जुआ खेलने के कारण उनको बड़ा कष्ट भी सहना पड़ा।

राजा नल के एक भाई और था, उसका नाम पुष्कर था। नल को राजा बना देख कर उसके मन में बड़ा द्वेष उत्पन्न हुआ। उसने नल को जुआ खेलने के लिए कहा। नल और पुष्कर जुआ खेलने लगे। हारते हारते राजा नल अपना सारा राजपाट हार गये। यहाँ तक कि वे अपने शरीर पर के गहने और कपड़े भी हार गये। केवल उनके पहिनने की एक धोती बच रही।

दमयन्ती बड़ी समझदार थी जुए में राजा को हारते देख कर उसने पहले ही अपने पुत्र और कन्या को अपने पिता

के घर भेज दिया था। पुष्कर ने नल को राज में से निकाल दिया। उसने नगर भर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि नल को जो कोई अपने घर में ठहरने देगा, उसे प्राण-दण्ड दिया जायगा।

नल को जाते देख कर दमयन्ती भी राजमहलों से निकल कर उनके पीछे चली। नगर के लोग उन राजा रानी की यह दशा देख कर बहुत उदास हुए, परन्तु पुष्कर के डर से किसी ने उनसे बात भी न की।

राजा नल दमयन्ती के साथ तीन दिन-रात बिना खाये पिये बराबर चलते गये। फिर एक वृक्ष के नीचे भूख प्यास से व्याकुल होकर वे बैठ गये। राजा नल ने दमयन्ती को बहुत समझाया कि "तुम अपने पिता के घर चली जाओ।" परन्तु दमयन्ती ने रो कर कहा—"प्राणनाथ! आप ऐसा क्यों कहते हैं? आपका साथ छोड़ कर पिता के घर में मुझे सुख नहीं मिल सकता। मैं आपका मुख देख कर सब दुःख को भूल जाऊँगी।"

राजा ने कुछ उत्तर न दिया। दोनों भूख से व्याकुल थे और मार्ग चलते चलते थक गये थे। वे उसी वृक्ष के नीचे पड़ कर सो गये। दमयन्ती की आँख तो

शीघ्र ही लग गई, परन्तु नल को नींद न आई। वे अपनी दशा पर चिन्ता करने लगे। वे बार बार रानी दमयन्ती के मुख की ओर देख कर लंबी साँस खींचते और आप ही आप कहते कि "हाय! कोमल बिछौने पर सोने वाली दमयन्ती आज काँटेदार भूमि पर सो रही है। आज तीन दिन से भोजन तक नहीं किया, केवल पानी पीकर प्राण धारण किये हुए है। मुझ से दमयन्ती की यह दशा देखी नहीं जाती। यह मेरा साथ नहीं छोड़ेगी और मेरे साथ इसको भी वन के कष्ट भोगने पड़ेंगे। यदि मैं इसे छोड़कर चला जाऊँ तो यह अवश्य अपने पिता के घर चली जायगी। यह सोचकर राजा नल दमयन्ती को वहीं छोड़ कर चले गये।

जब दमयन्ती की आँख खुली तब वह नल को अपने पास न देख कर बहुत व्याकुल हुई। झटपट उठ कर उसने पुकारना प्रारम्भ किया—"नाथ! मुझे अकेली छोड़ कर आप कहाँ चले गये, मैं बहुत घबड़ाती हूँ, मेरे साथ आपको ऐसी हँसी नहीं करनी चाहिये। हे महाराज! शीघ्र आइए मुझसे आपका वियोग सहा नहीं जाता मैंने क्या अपराध किया जो आप छोड़ कर चले गये।

जब राजा नल न लौटे तब दमयन्ती फूट फूट क
विलाप करने लगी । दमयन्ती रोती बिलपती उ
भयानक जन्तुओं से भरे वन में घूमने लगी । पत्थर औ
काँटों पर चलने से उसके पैरों से रक्त बहने लगा। व
झाड़ियों में जाने से उसके शरीर का चमड़ा कई स्था
पर छिल गया।

जिस वन में वह घूम रही थी,उसमें बड़े बड़े ऊँ
पेड़ खड़े थे। चारों ओर हाथी, सिंह और रीछों का
चिंघाड़ सुनाई देता था। चलते चलते दमयन्ती मुनियों
के आश्रम में पहुँची। मुनियों ने उसे खाने के लिए फल
दिये। दमयन्ती ने उनसे नल का पता पूछा, परन्तु मुनियों
को नल का कुछ समाचार ज्ञात न था। तब दमयन्ती वन
में चारों ओर घूम कर नल को ढूँढने लगी।

कई दिन के पश्चात् उसे कुछ यात्री मिले जो सुबाहु
नगर को जा रहे थे। दमयन्ती उन्हीं के साथ नगर में
चली गई। वहाँ की रानी दमयन्ती को देखकर यह
अनुमान किया कि यह किसी भले घर की स्त्री है, किसी
... के कारण यह मारी मारी फिरती है। रानी ने
दमयन्ती को बुलाकर उसकी इस दुर्दशा का कारण पूछा।
... दमयन्ती ने अपना ठीक ठीक वृत्तान्त न बताया।

ने उसको अपनी कन्या सुनन्दा के लिए नौकर रख
ा। दमयन्ती वहीं रहने लगी।

जब राजा नल और दमयन्ती के वन जाने का समाचार
र्भ नगर में राजा भीमसेन के पास पहुँचा तब उन्होंने
को खोज लाने के लिए चारों दिशाओं में दूत भेजे।
दूत सुबाहु नगर में आया और दमयन्ती को पहचान
वह उसे विदर्भ नगर में उसके पिता के पास ले गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—प्रथा, व्यसनी और विपत्ति।

२—नीचे दिए हुए शब्दों को उचित स्थानों में भरो—

प्राणधारण, राजमहलों से, अनुसार, धर्मात्मा।

उस समय की प्रथा के—स्वयंवर रचा गया। राजा युधिष्ठिर—और वीर थे। वह केवल—के लिए भोजन करती थी।—रोने की आवाज़ आई।

३—इस पाठ से तुम्हें प्राचीन विवाह-पद्धति के सम्बन्ध में क्या पता चलता है?

४—नल के कष्ट का क्या कारण था?

५—जुआ खेलना क्यों बुरा है?

११–महारानी दमयन्ती (२)

दमयन्ती को अकेली छोड़ कर नल कई दिनों तक वन में भटकते रहे। अन्त में घूमते फिरते वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ पहुँचे। नल रथ हाँकने की विद्या में बड़े प्रवीण थे। राजा ऋतुपर्ण ने उनको अपनी अश्वशाला का प्रबन्ध-कर्ता बनाया। उस समय राजा नल की आकृति ऐसी बदल गई थी कि उनका वार्ष्णेय नाम का सारथी भी, जो उनके वन चले जाने पर अयोध्या के राजा के यहाँ सारथी हो गया था, उनको न पहचान सका। नल ने अपना नाम बाहुक रक्खा।

दमयन्ती नल के लिए रात दिन चिन्तित रहा करती थी। उसको उदास देख कर राजा भीमसेन ने नल को खोजने के लिए दूर दूर आदमी भेजे। उन आदमियों में से एक अयोध्या जा निकला। वहाँ उसने राजा नल को पहिचान लिया। परन्तु नल अपना ठीक ठीक परिचय नहीं देते थे, इससे उसके मन में सन्देह बना ही रहा। उसने लौट आकर दमयन्ती से नल के रूप रंग और आकार का वर्णन किया। दमयन्ती ने निश्चय कर लिया कि वे ही राजा नल होंगे। उसने अपने पिता से कह कर अयोध्या के राजा के पास निमन्त्रण भेजवाया कि "राजा नल का कुछ पता नहीं

है, इसलिये दमयन्ती अब दूसरा स्वयंवर करना चाहती है, अतएव आप शीघ्र हमारी राजधानी में आइए।" निमन्त्रण लेकर एक ब्राह्मण अयोध्या गया। उस समय स्वयंवर की नियत तिथि इतनी समीप थी कि राजा ऋतुपर्ण किसी प्रकार भी विदर्भ नगर नहीं पहुँच सकते थे। परन्तु राजा नल ने कहा कि मैं ठीक समय पर आपको विदर्भ नगर में पहुँचा दूँगा।

राजा नल रथ हाँकने की विद्या में बड़े निपुण थे। उन्होंने राजा ऋतुपर्ण को ठीक समय पर विदर्भ नगर में पहुँचा दिया। दमयन्ती ने अपने महल पर चढ़ कर रथ को देखा, परन्तु आपत्तियों के मारे राजा नल की सूरत ऐसी बिगड़ गई थी कि वह उनको अच्छी तरह पहचान न सकी।

राजा ऋतुपर्ण रथ पर से उतर कर राजा भीमसेन से मिलने चले गये, और नल घोड़ों को अश्वशाला में बाँध-कर एकान्त में बैठ कर सोचने लगा कि स्त्रियों का स्वभाव बड़ा चञ्चल होता है। दमयन्ती अब मुझको बिल्कुल भूल गई। यह कैसे शोक की बात है कि आज मैं अपनी ससुराल में रथवान होकर आया हूँ और कल राजा ऋतुपर्ण मेरी रानी से विवाह करेगा।

इधर दमयन्ती ने अपनी केशिनी नाम की दासी को नल के पास भेज कर पुछवाया कि तुम राजा नल को जानते हो ? केशिनी ने आकर उत्तर दिया कि वह तो चुपचाप उदास बैठा है और कुछ उत्तर नहीं देता।

तब दमयन्ती ने अपने दोनों बच्चों को केशिनी के साथ नल के पास भेजा। अपने बच्चों को देखते ही नल की आँखें भर आईं। परन्तु मुँह से उनसे कुछ न कहा। केशिनी ने यह समाचार दमयन्ती से कहा; दमयन्ती को अब कुछ निश्चय होने लगा कि यह सारथी ही राजा नल है।

दमयन्ती ने अपनी माँ की आज्ञा से बाहुक को अपने महल में बुलवाया। जब नल दमयन्ती के सामने पहुँचे तब दोनों थोड़ी देर तक एक दूसरे को टकटकी बाँध कर देखते रहे। फिर दोनों ओर से करुणा का समुद्र उमड़ आया। दमयन्ती दौड़ कर नल के चरण पर लोटने लगी। उसने कहा—"प्राणनाथ! आप ऐसी दासी को अकेली वन में छोड़ कर चले गये, आपको कुछ दया न आई।"

नल का गला भर आया और वे भी रोने लगे। परन्तु फिर कहने लगे—"मैंने इसलिए तुमको छोड़ा था कि तुमको हमारे साथ वन में भटकते फिरने में कष्ट न हो। वास्तव में

तुमसे हमारा प्रेम कम नहीं हुआ। परन्तु देखता हूँ कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए अब प्रेम नहीं है, नहीं तो तुम दूसरा विवाह क्यों करतीं।"

दमयन्ती ने हाथ जोड़ कर कहा—"हृदयेश्वर ! ऐसी बात तो नहीं है। यह स्वयंवर का आडम्बर तो केवल आपके बुलाने के लिए ही किया गया है। मेरे हृदय में आपके लिए वैसा ही प्रेम है जैसा पहले था। मैं क्षण भर के लिए आपको नहीं भूली। आज बड़े आनन्द का दिन है कि आप के दर्शन हुए।"

नल के प्रकट होने का समाचार शीघ्र ही महल और नगर में फैल गया और चारों ओर बड़ा आनन्द मनाया जाने लगा।

जब राजा ऋतुपर्ण ने सुना कि हमारा सारथी बाहुक तो राजा नल थे तब वे उनके पास आकर कहने लगे—हे राजन् ! मैंने आपको नहीं पहचाना। इस कारण आप के साथ जो मुझ से कभी दुर्व्यवहार हुआ है उसे क्षमा कीजिए मैं जुआ खेलने की विद्या में बड़ा प्रवीण हूँ। मैं आपको यह विद्या सिखाये देता हूँ. आप फिर जाकर पुष्कर से जुआ खेलिए आपकी अवश्य जीत होगी।

राजा ऋतुपर्ण ने राजा नल को जुआ खेलने की वि
सिखा दी। फिर वे अयोध्या वापस लौट गये।

राजा भीमसेन ने नल को बहुत सा धन, हाथी, घो
और रथ देकर दमयन्ती के साथ विदा किया। निा
नगर में पहुँच कर राजा नल ने पुष्कर के साथ फिर जुअ
खेला।

दिन सदा एक से नहीं रहते। सुख के बाद दुःख औ
दुःख के बाद सुख आता ही रहता है। इस बार पुष्कर ।
गया। नल अपना राज-पाट जीत कर दमयन्ती के साथ सु
से रहने लगे।

नल ने अपने भाई पुष्कर को भी राज्य में हि
ा दिया।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनका वाक्यों में प्रयो
करो—प्रबन्ध-कर्ता, आकृति, आँखें भर आईं, करुण
का समुद्र उमड़ आया, गला भर आया और आडम्बर
२—दमयन्ती के पाठ से तुमको दमयन्ती के चरित्र के सम्बन
में क्या ज्ञान होता है ?
३—दमयन्ती ने द्वितीय स्वयंवर क्यों रचा था ?

४—राजा नल ने क्या दोष था और उनको उसके कारण क्या दुःख भोगना पड़ा ?

१२—समय चूकना

आछे दिन पाछे गये
हरि से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करे
जब चिड़िया चुग गई खेत ॥ १ ॥

काल करे सो आज कर
आज करे सो अब्ब।
पल में परलै होयगा
बहुरि करोगे कब्ब ॥ २ ॥

का बर्षा जब कृषी सुखाने
समय चूकि पुनि का पछताने ॥ ३ ॥

आज कहै काल्ह भजूँगा
काल्ह कहै फिर काल्ह
आज काल के करत हीं
औसर जासी चाल ॥

[illegible]

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—शुद्ध रूप बनाओ—आड़े, परले और कल्ह।
२—अन्तिम छन्द का अर्थ बताओ।

१३—काम और आराम

दुनिया में बिना काम किये नहीं चलता और आराम भी नहीं मिलता। काम कर चुकने पर ही हमें आराम मिलता है। काम और आराम में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस कारण जो आराम चाहे, वह काम करने के लिए उत्सुक रहे और जब तक श्रान्त न हो जाय, तब तक काम करने में लगा रहे। जीवन की सफलता कार्य करने पर ही निर्भर है। जो शारीरिक या मानसिक कार्यों के करने में अज्ञान अथवा आलस्य वश, दुःख समझते और दिन भर खाली पड़े रहते हैं, वे मनुष्य अपने जीवन को व्यर्थ खोते हैं। जीवन की सफलता कार्यों ही में है। हमारा अस्तित्व ही कार्यों पर निर्भर है। जब तक प्राण हैं तब तक काम है। इससे जो काम नहीं करते, वे प्राणहीन हैं या जीते ही मरे हुए हैं। ऐसे लोग इस अमूल्य मनुष्य जीवन का लाभ न स्वयं उठाते हैं,

न दूसरों को इनसे कुछ लाभ पहुँच सकता है। काम करने में दृढ़ता दिखाना मनुष्यत्व का लक्षण है।

काम करके सफलता का मुकुट प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। जो काम करने से डरते हैं वे कायर हैं, कायरता के प्रचारक हैं, तथा समाज के लिए भार रूप हैं। इनका जीवन पशु जीवन से भी निकृष्ट है।

हमारे जीवन में काम दुःखदायी नहीं है। जिस समय कोई मनुष्य काम में प्रवृत्त होता है और जब तक काम में लगा रहता है तब तक उसकी एक अद्भुत आनन्ददायी दशा रहती है। हमारी चिन्ताएँ और जीवन के अनेक छोटे मोटे दुःख पास नहीं आते और काम पूर्ण होने पर सफलता प्राप्त करके आनन्द और हर्ष प्राप्त होती है। किसी ने सत्य कहा है कि जो काम मेहनत से किया जाता है, उसके अन्त में सदा सुख मिला करता है। जिस समय हम काम में लगे रहते हैं उस समय घड़ी की सुइयाँ कितनी जल्दी अपना चक्कर काटती मालूम होती हैं। परन्तु आलसी के लिए समय एक रोग के समान जान पड़ता है वह खाट में पड़ा पड़ा यही कहा करता है कि क्या करें दिन तो

न दूसरों को इनसे कुछ लाभ पहुँच सकता है। काम करने में दृढ़ता दिखाना मनुष्यत्व का लक्षण है।

काम करके सफलता का मुकुट प्राप्त करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। जो काम करने से डरते हैं वे कायर हैं, कायरता के प्रचारक हैं, तथ समाज के लिए भार रूप हैं। इनका जीवन पशु जीवन से भी निकृष्ट है।

हमारे जीवन में काम दुःखदायी नहीं है। जिस समय कोई मनुष्य काम में प्रवृत्त होता है और जब तक काम में लगा रहता है तब तक उसकी एक अद्भुत आनन्ददायी दशा रहती है। हमारी चिन्ताएँ और जीवन के अनेक छोटे मोटे दुःख पास नहीं आते और काम पूर्ण होने पर सफलता प्राप्त करके आनन्द और हर्ष प्राप्त होती है। किसी ने सत्य कहा है कि जो काम मेहनत से किया जाता है, उसके अन्त में सदा सुख मिला करता है। जिस समय हम काम में लगे रहते हैं उस समय घड़ी की सुइयाँ कितनी जल्दी अपना चक्कर काटती मालूम होती है परन्तु आलसी के लिए समय पहाड़ के समान जान पड़ता है वह खाट में पड़ा पड़ा यही कहा करता है कि क्या करें दिन तो

वैसे ही कोई कोई मनुष्य भी काम करने में दुःख समझते हैं।

परन्तु जब मनुष्य को चेत होता है और वह उन पुरुषों की ओर देखता है, जिन्होंने इस संसार में अपना नाम अपने कामों से विख्यात किया है, तब उसे यह उपदेश मिलता है कि जो लोग अपना भला और लाभ चाहते हों वे दृढ़ता से काम करें।

मानवजीवन दिन दिन कम हो रहा है और इसका अन्तिम परिणाम निस्सन्देह मृत्यु ही है। परन्तु मृत्यु के पश्चात् भी तो यहाँ के कर्मों का फल भोगना पड़ता है। इससे काम से कभी मुँह मत मोड़ो। संसार की सारी वस्तु काम न लेने से विगड़ जाती है। दूध जो गौ ने दिया है, यदि यथासमय उसे काम में न लाओगी तो विगड़ जायगा और स्वास्थ्य के लिए हानिकारी हो जाने से उसे फेंकना पड़ेगा। किसी वस्तु को अपने आप विगड़ने देना उचित नहीं है। अच्छा हो, यदि उससे काम ले लिया जाय। धूल जैसे तुच्छ पदार्थ से हम अपना काम ले सकते हैं, फिर हमारा शरीर तो बड़ा मूल्यवान है; इससे क्यों न यथोचित काम लें। अरस्तू ने कहा

कि मनुष्य से बड़ा कोई नहीं है और उसमें भी अमूल्य पदार्थ उसका मन है, परन्तु बेकार मनुष्य का मन ही उसका शत्रु है। यह उसको ऐसे ऐसे हानिकारी विषयों में और दुर्व्यसनों में फँसा देता है जिनसे मनुष्य को बड़े बड़े दुःख उठाने पड़ते हैं। प्यारी बालिकाओ, समय बीत रहा है, मृत्यु समीप आ रही है, ऐसे अवसर पर तुम्हें जो कुछ शुभ कार्य करना हो सो कर चलो।

काम और आराम पास ही पास रहने वाले बड़े मित्र हैं। काम करना बड़ा आवश्यक है, परन्तु उसकी अधिकता से हानि होती है। बच्चे को माता का दूध पीना गुणकारी है, परन्तु वह दूध भी अधिक पीने से बच्चे बहुत बीमार हो जाया करते हैं। हममें से बहुतेरे अपने आपको बहुधा इसी कारण से रोगग्रस्त बना लिया करते हैं कि अपनी पाकस्थली को आराम नहीं लेने देते। मनुष्यों को काम के साथ साथ आराम की भी आवश्यकता है। असमय में किया हुआ काम बड़ा दुःखदायी हुआ करता है। बादशाह सुलेमान का कहना है कि सब कामों के लिए समय होता है, जब समय [illegible] काम करो तो [illegible] करो [illegible] काम करने का सब से बड़ा [illegible] यही है कि काम कर चुकने पर, आराम

मिलता है। काम और आराम साथ साथ सफलता को ला देते हैं।

केवल आराम ही आराम भी बड़ा हानिकारी है। आराम से रहने के लिये यदि मनुष्य कुछ काम न करे तो वह कभी आराम से नहीं रह सकता—उसका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा और पुट्ठे तथा रग ढीली पड़ कर उसमें निर्बलता उत्पन्न कर देंगी। इस पर धनाढ्य मनुष्य को पूरा ध्यान रखना चाहिए। योरप के धनाढ्य पुरुष सदैव कुछ न कुछ काम किया करते हैं। इङ्गलैन्ड के प्रधान मन्त्री मि॰ ग्लेडस्टन वृक्षों की काट छाँट किया करते थे और बड़े उद्यमी थे। प्रकृति रानी मनुष्य को काम में लगा हुआ देख कर ही प्रसन्न रहती है। उसका उपदेश है कि हर समय कुछ न कुछ काम करते रहो, चाहे उस काम से तुम्हें आर्थिक लाभ हो या न हो। उसका पुरस्कार तुम्हें अवश्य ही प्राप्त होगा। काम से तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और चित्त प्रसन्न रहेगा काम करने में आरम्भ में चाहे असफलता भी हो, परन्तु दृढ़ और उद्योगी बने रहने से सफलता अवश्य प्राप्त होगी तुम्हारा जन्म-जीवन सफलता को प्राप्त होने के लिए है अच्छा काम कर पुरस्कार इस काम को अच्छी तरह

समाप्त कर देना ही है। हमारा जन्म मानो काम औ
आराम का निरन्तर उपयोग करने के लिए ही है।

मानव-जीवन अभिमानी राजाओं की कामनाओं
पूर्ण करने को तथा किसी लोभी पुरुष की तृष्णा
पूर्ण करने को तथा ऐसे ऐसे अन्य काम करने के लिए
है, इसे हम भी मानते हैं, परन्तु धर्मानुष्ठान और पुण्यकार्य
के लिए तथा सद्गुण ग्रहण करने के लिए एवं अपने
देश कार्य के लिए, अलम् है। सिकन्दर अनेक राज्य
को जीत कर भी सन्तुष्ट न हुआ और उसकी सदैव
अन्य राज्यों को विजय करने की इच्छा बनी ही र
परन्तु तत्कालीन महात्मा पोप डायगोनीज़ चक्रवर्ती
समान सन्तुष्ट था। ऐसा मालूम होता है कि वह मान
जीवन के सब सुख प्राप्त करके आनन्द में मग्न
सिकन्दर एक दिन उस महात्मा के पास जाकर क
लगा—"डायगोनीज़ मुझसे कुछ माँगो।" महात्मा
उत्तर दिया—"हमारे दासों के दास, तुझसे क्या मा
मैंने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की है और उन्हें अपना
बनाया, किन्तु सिकन्दर, तू मेरे दासों का दास
इसीलिए बना, तुझसे मैं क्या माँगूँ?" तृष्णा को मि
अपनी इच्छा को शान्त करने, अपने इच्छानुसार

जोड़ने और कामनाओं को पूर्ण करने के लिए जीवन का समय अत्यन्त अल्प है, परन्तु धैर्यपूर्वक सत्कार्य करने के लिए हमारा जीवन यथेष्ट है। इससे जीवन में वे ही काम करने चाहिये, जो हमारे जीवन में पूर्ण हो सकें और उनका फल भी हम प्राप्त कर सकें।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बतलाओ—घनिष्ठ, उत्सुक, अस्तित्व मनुष्यत्व, निकृष्ट, समृद्धि, दुर्व्यसन, पाकस्थली, धनाढ्य और लक्ष।

२—वाक्य बनाओ—शारीरिक, अमूल्य, मुँह मोड़ना, स्वर्गीय और निस्सन्देह।

३—काम और आराम दोनों की आवश्यकता क्यों है?

४—सफलता प्राप्त करने के लिये किन किन बातों का होना आवश्यक है?

५—प्रकृति से क्या शिक्षा मिलती है?

१४—सुघड़ बेटी

बहुत वर्ष बीते इङ्गलैण्ड देश के समीपवर्ती राष्ट्र स्काटलैण्ड में एक छोटी सी लँगड़ी लड़की ग्रेस का जन्म हुआ।

समुद्र की लहरों ने ही ग्रीट के पिता के प्राण लिये थे और ग्रीट को लँगड़ी बना दिया था। अन्य बच्चों को खेलता देख बेचारी ग्रीट की आँखों से अश्रु-धारा बह निकलती क्योंकि लँगड़ी हो जाने के कारण वह उन बालकों के साथ खेलने में असमर्थ थी। इसके अतिरिक्त वह कभी कभी घोर कष्ट के कारण कई कई दिन तक बिस्तरे पर पड़ी रहती।

एक दिन ग्रीट टाँग के दर्द से पीड़ित हो खिड़की के नीचे बिस्तर पर पड़ी हुई थी। समुद्र की भयंकर लहरें खिड़की से टकरा रही थीं और इस समय बाहर की ओर देखना असंभव सा प्रतीत होता था। ग्रीट कमरे में चारों ओर ताक रही थी। देखती क्या है कि एक मकड़ी खिड़की के एक कोने में बड़ी चतुराई और फुर्ती से जाला बना रही है। मकड़ी की चतुराई देख कर ग्रीट हक्कीबक्की रह गई। देखते ही देखते पहले बर्फ़ सा सफ़ेद एक जाला बना और फिर सुन्दर छोटा सा पुतला। मानों वह पुतला सिर झुकाए धीमे स्वर से ग्रीट से कह रहा है—ग्रीट मुझे देखकर बुनना सीख लो।

ग्रीट बड़े ध्यान से मकड़ी का फुर्ती से जाला बुनना देखने लगी। थोड़ी देर में ग्रीट की माँ ने दरवाज़ा खोल

दिया। मकड़ी बाहर भाग गई। इस पर ग्रीट चौंक पड़ी और बोली—अम्मा! आपने बहुत बुरा किया जो मकड़ी को भगा दिया; मैं तो उससे बढ़ियाँ बुनाई सीख रही थी।

अम्मा ने कहा बेटी ग्रीट! क्या स्वप्न देख रही हो? तो दिन भर काम करती करती थक गई। ग्रीट ने माता की इस बात का कुछ भी उत्तर न दिया और रातभर मकड़ी की चतुराई पर मनन करती रही। काल उठकर ग्रीट कलेवा किये बिना ही धुनने और में जुट गई। एक दो दिन तक तो ग्रीट मकड़ी सा बारीक न कात सकी, परन्तु वह बारीक कातने का भरसक यत्न करती रही। चर्खा घुमाते समय ग्रीट को यही ध्यान रहता मानों मकड़ी धीमे स्वर से उसके कान में कह रही है—कोशिश करो, कोशिश करो।

मकड़ी के जाले को देख देख कर वह बढ़ियाँ कातना सीख गई। ऊन कात कर ग्रीट ने एक बहुत ऊनी चद्दर तैयार की। इस चद्दर की चर्चा दूर दूर के लोगों के कान तक पहुँची। चारों ओर से लोग इस बढ़िया चद्दर को देखने के लिए आने लगे। यहां तक कि समीपवर्ती एक टापू की धनाढ्य स्त्री ने इस चद्दर को देखने के लिए मंगाया। और फिर मोल लेने के लिए इच्छा प्रगट की।

अपने इतने परिश्रम से तैयार की हुई चद्दर देने के लिए ग्रीट का चित्त न चाहता था, परन्तु माता के आग्रह करने पर विवश हो ग्रीट को चद्दर देनी पड़ी । ग्रीट को इस चद्दर का मूल्य एक सोने की मोहर मिली ।

शेटलैंड के निवासियों को सोने का सिक्का देखने का यह पहला ही अवसर था। उन्होंने ग्रीट से बुनने और कातने का काम सीखने की इच्छा प्रकट की । ग्रीट बड़ी ख़ुशी से टापुओं के रहने वालों को बढ़िया चद्दर तैयार करना सिखाने लगी । थोड़े ही दिन में केवल ग्रीट, उसकी माता और शेटलैण्ड टापू के रहने वालों के नहीं, वरन् आस-पास के टापुओं के निवासियों के भी अच्छे दिन फिरे ।

शेटलैण्ड के निवासी उपरोक्त रीति से संसार भर में बढ़िया ऊनी चद्दर बनाने में सब से बढ़िया कारीगर बन गये । आज इस टापू के रहने वाले जितनी बढ़िया चद्दरें सुइयों से बुन देते हैं, अन्य देशों के निवासी इतनी बढ़िया मशीनों की सहायता से भी नहीं बुन सकते । यह क्यों ? कारण स्पष्ट ही है कि शेटलैण्ड की साहसी बालिका ग्रीट ने यह कारीगरी बहुत पहिले ही मकड़ी से सीख ली थी ।

जिस देश में ग्रीट जैसे साहसी बच्चे जन्म लें वह देश

यदि ऐसी आश्चर्यजनक उन्नति करे तो इसमें कौन अचम्भे की बात है। साहसी और कर्मवीर लोग तो—

ठीकरों को वह बना देते हैं सोने की डली।
रङ्ग को कर के दिखा देते हैं वह सुन्दर खली।
वह बबूलों में लगा देते हैं चम्पे की कली।
काक को भी वह सिखा देते हैं कोकिल-काकली।
ऊसरों में हैं खिला देते अनूठे वह कमल।
वह लगा देते हैं उकठे काठ में भी फूल-फल।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनका वाक्यों में प्रयोग करो—समीपवर्ती, टूटे-फूटे, प्राकृतिक, प्रतीत, हर्ष मगन करती और विवश।

२—सुघड़ बेटी की कथा संक्षेप में बताओ।

३—प्रौढ़ की जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?

४—अन्तिम छन्द का अर्थ बताओ।

१५—नीति के दोहे

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥ १॥

जिहि प्रसङ्ग दूपन लगैं, तजिये ताको साथ।
मदिरा मानत हैं जगत, दूध कलारिन हाथ ॥ २ ॥

जाके सङ्ग दूपन दुरैं, करिये तेहि पहचानि।
जैसे मानै दूध सब, सुरा अहीरी पानि ॥ ३ ॥

दोप भरी न उचारिये, जदपि जथारथ बात।
कहे अन्ध को आँधरो, मानि बुरो सतरात ॥ ४ ॥

नीच निचाई नहिं तजैं, कितौ करैं सतसङ्ग।
तुलसी चंदन विटप वसि, विप नहिं तजत भुजंग ॥ ५ ॥

जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसङ्ग।
चन्दन विप व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजङ्ग ॥ ६ ॥

सज्जन तजत न सुजनता, कीने हूँ अपकार।
ज्यों चन्दन छेदे तऊ, सुरभित करत कुठार ॥ ७ ॥

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
रोपै पेड़ बबूर को, आम कहाँ ते होय ॥ ८ ॥

दुर्जन के संसर्ग तें, सज्जन सहत कलेस।
ज्यों रावन अपराध तें, बन्धन लह्यो जलेस ॥ ९ ॥

मिथ्याभाषी साँच हूँ, कहत न मानै कोय।
भाँड पुकारे पीर वस, मिस समुझत सब कोय ॥१०॥

उद्यम कबहुँ न छाँड़िये, पर आशा के मोद।
गागर कैसे फोरिये, उनयो देखि पयोद ॥११॥

सब ते लघु है माँगिबो, या में फेर न सार।
बलि पै जाचत ही भये, बावन तन करतार ॥१२॥

सब सों आगे होय कै, कबहुँ न करिये बात।
सुधरैं काज समान फल, बिगरैं गारी खात ॥१३॥

सेवक सोई जानिये, रहे बिपति में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहे साथ इक रंग ॥१४॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—मोर, प्रमत्त, सतरात, बिरा भुजङ्ग, सुगन्धित, अलेम, मिस, मेद, उद्यम, उनयो पयोद, बावन और अवगुण।

२—वर्तमान हिन्दी में इनका रूप बताओ—ताको, ह्वै, किते और नहीं।

३—शुद्ध रूप बताओ—प्रकृति, जथारथ, कलेस और अलेम।

४—'करनी' और 'जाति' के अर्थ बताओ।

५—'माँमाँ' शब्द का अर्थ बताओ।

६—इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है

१६—सर सैयद अहमद ख़ाँ

जाति और देश की उन्नति चाहने वाले बड़े लोगों में सर सैयद अहमद ख़ाँ का भी नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। जिस समय यह पैदा हुए थे उस समय इनकी जाति की दशा अच्छी न थी। उसकी गिरी हालत को देख कर इनका दिल भर आया और ये सोचने लगे कि यह वही जाति है जिसने किसी समय अपनी विद्या-बुद्धि के प्रभाव से सारे पश्चिमी देशों को प्रभावित किया था, और वाणिज्य में भी सब देशों का अग्रगण्य था। इस समय उसी जाति की ऐसी गिरी हालत को मुझे, जिस प्रकार हो, शीघ्र ही सुधारना चाहिए, क्योंकि मैं भी उसी जाति का एक मनुष्य हूँ।

इनका जन्म १७ अक्टूबर सन् १८१७ ई० को दिल्ली शहर के एक प्रसिद्ध वंश में हुआ। इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। जब ये केवल सोलह वर्ष के थे तब इनके पिता मर गये। इतने ही समय में इन्होंने अरबी और फ़ारसी भली भाँति पढ़ ली थी। पिता के मरने पर ये सरकारी नौकरी ढूंढने में लग गये। इनकी इच्छा और पढ़ने की थी, परन्तु कहीं से सहायता न मिलने के कारण ये और अधिक

न पढ़ सके। बाध्य होकर इनको पढ़ना-लिखना छोड़ नौकरी कर लेनी पड़ी।

सन् १८३८ ई० में इनको सरकारी नौकरी मिली और उस पद पर इन्होंने ऐसी योग्यता से काम किया सरकारी अफ़सरों ने ख़ुश होकर इन्हें शीघ्र ही सरिश्तेदारी और उसके बाद सदर-आला के ऊँचे पद तक पहुँचा दिया। छब्बीस वर्ष तक नौकरी करके इन्होंने पेंशन ले ली और ये अलीगढ़ में आकर रहने लगे।

सन् १८५७ ई० में ग़दर के समय इन्होंने अँगरेज़ों की बड़ी सहायता की। इसके बदले में सरकार ने इनको और इनके बड़े लड़के महमूद के लिए दो दो सौ रुपया मासिक की पेन्शनें नियत कर दीं। सन् १८६९ ई० में ये विलायत गये और साथ में अपने लड़कों को भी ले गये। इन्होंने विलायत में अपने लड़कों को क़ानूनी शिक्षा दिलवाई। वहाँ से लौटने पर सर महमूद हाईकोर्ट के जज हुए और हामिद साहब पुलिस के बड़े पद पर नियुक्त किये गये।

विलायत जाकर जब सर सैयद अहमद ख़ाँ ने शिक्षा का अच्छा प्रचार देखा, तब उनकी यह इच्छा हुई कि किसी तरह उन्हें भी अपनी जाति में शिक्षा प्रचार

इनकी उन्नति करनी चाहिये। वहाँ से लौटते ही आपने अलीगढ़ में एक कालिज की नींव डाल दी और हर एक बड़े आदमी से मिल कर आपने इस बात में उनकी राय ली, साथ ही इसके लिए रुपयों का इकट्ठा करना भी आरम्भ कर दिया।

इस काम में आपने सरकार से भी सहायता माँगी और सरकार ने इनकी काफ़ी मदद की। आपके उद्योग से अलीगढ़ में मुसलमानों के लिए एक बड़ा कालिज खुल गया। इस कालिज के लिए सर सैयद अहमद खाँ साहब ने जितना यत्न किया और किसी भी आदमी ने नहीं किया। इसीलिये जब तक इस कालिज का नाम रहेगा तब तक सर सैयद अहमद खाँ का भी नाम रहेगा। आज जितने भी मुसलमान बड़े बड़े पदों पर हैं प्रायः सभी इसी कालिज के पढ़े हुए हैं। इस कालिज से सचमुच मुसलमानों की बड़ी उन्नति हुई है।

सर सैयद अहमद [illegible] और [illegible] और [illegible] और [illegible]

ग़रीब मुसलमान लड़कों को पढ़ने में सहायता देकर ऊँचे प
पर पहुँचा दिया। सर सैयद अहमद खाँ ने एक पुस
भी लिखी है जिसमें दिल्ली की इमारतों के चित्र
हुए हैं और साथ ही उनका वर्णन भी है। आप
क़लम में भी बड़ा ज़ोर था। इनकी बातों को स
लोग बड़े ध्यान और सम्मान से सुनते और मानते
उस समय आपका नाम सरकार और प्रजा दोनों
अच्छा था। सन् १८९८ ई० में आप इस दुनिया से
कर गये।

पूर्वजों और अच्छे आदमियों के जीवन-चरित्रों
पढ़ने से हमारे चित्त पर अच्छा असर पड़ता है। ह
चाल-चलन अच्छा हो जाता है और हमारी आदतें
सुधर जाती हैं। लोगों ने अपनी उम्र का बहुत
अंश जाति और देश की सेवा में लगाया है, ह
धर्म है कि हम उनके कार्यों की प्रशंसा करें और उ
सद्विचारों और सद्गुणों को लेकर इस दुनिया में उन
ऐसे अच्छे काम करते हुए नाम पैदा करें। हमें चा
कि हम ऐसे काम करें जिनमें हमारा, हमारे देश
देश-भाइयों का लाभ हो। तभी हमारा जन्म लेना स
कहा जा सकता है।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—सर सैयद अहमद ने अपनी जाति के साथ क्या भलाई की थी उसका हाल संक्षेप से वर्णन करो।

२—उन्होंने सरकार की क्या सेवा की और उसका उन्हें क्या बदला मिला?

३—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनको वाक्य में प्रयोग करो—

दिल भर आया, अपनी आँखों से देखना, क़लम में ज़ोर होना, दुनिया से कूच करना, नाम पैदा करना, गौरव, महत्त्व और योग्यता।

४—बड़े लोगों के जीवन चरित्रों से क्या शिक्षा मिलती है?

१७—बच्चों का पालन-पोषण

लड़कियों को बच्चों के पालन-पोषण की विधि अवश्य जाननी चाहिए, क्योंकि आगे चल कर उनके लिए यह ज्ञान बहुत उपयोगी होगा।

आजकल बहुत से बच्चे छोटी ही अवस्था में मर जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रायः माताएँ उनके

ग़रीब मुसलमान लड़कों को पढ़ने में सहायता देकर ऊँचे पदों
पर पहुँचा दिया। सर सैयद अहमद खाँ ने एक पुस्तक
भी लिखी है जिसमें दिल्ली की इमारतों के चित्र बने
हुए हैं और साथ ही उनका वर्णन भी है। आपकी
क़लम में भी बड़ा ज़ोर था। इनकी बातों को सब
लोग बड़े ध्यान और सम्मान से सुनते और मानते थे।
उस समय आपका मान सरकार और प्रजा दोनों में
अच्छा था। सन् १८९८ ई० में आप इस दुनिया से कूच
कर गये।

पूर्वजों और अच्छे आदमियों के जीवन-चरित्रों
पढ़ने से हमारे चित्त पर अच्छा असर पड़ता है। हमारा
चाल-चलन अच्छा हो जाता है और हमारी आदतें
सुधर जाती हैं। लोगों ने अपनी उम्र का बहुत
भाग जाति और देश की सेवा में लगाया है, हम
धर्म है कि हम उनके कामों की प्रशंसा करें और उ
सद्विचारों और सद्गुणों को लेकर इस दुनिया में उनके
एस अच्छे काम करते हुए नाम पैदा करें। हमें चा
कि हम ऐसे काम करें जिनसे हमारा, हमारे देश
देश भाइयों का लाभ हो। तभी हमारा जन्म लेना स
कहा जा सकता है।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—सर सैयद अहमद ने अपनी जाति के साथ क्या भलाई की थी उनका हाल संक्षेप से वर्णन करो।

२—उन्होंने सरकार की क्या सेवा की और उसका उन्हें क्या बदला मिला?

३—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनको वाक्य में प्रयोग करो—

दिल भर आया, अच्छी आँखों से देखना, क़लम में ज़ोर होना, दुनिया से कूच करना, नाम पैदा करना, गौरव, अग्रगण्य और योग्यता।

४—बड़े लोगों के जीवन चरित्रों से क्या शिक्षा मिलती है?

१७—बच्चों का पालन-पोषण

लड़कियों को बच्चों के पालन-पोषण की विधि अवश्य जाननी चाहिए, क्योंकि आगे चल कर इनके लिए यह ज्ञान बहुत उपयोगी होगा।

आजकल बहुत से बच्चे छोटी ही अवस्था में मर जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रायः माताएं उनके

पले जलाती हैं और कमरे के दरवाज़े और खिड़कियाँ
द कर लेती हैं। इससे उस कमरे की वायु बिगड़ जाती
और उसी वायु में साँस लेकर बच्चा फूल की तरह मुरझा
ाता है।

कुछ स्त्रियाँ ऐसी मलिन स्वभाव की होती हैं कि वे
पने बच्चों की सफ़ाई पर तनिक सा भी ध्यान नहीं
ती। बच्चे मैले कुचैले बने रहते हैं, शरीर में फोड़े-
न्सियाँ निकल आती हैं। आँखों की सफ़ाई न होने से
नमें रोग पैदा हो जाते हैं और कितने ही बच्चे तो माता
ी इसी असावधानी से अंधे हो गये। यह कितने आश्चर्य
और दुःख की बात है कि माता का प्रेम बच्चे पर बहुत
अधिक होने पर भी वह नीरोग और चिरञ्जीवी नहीं हो
सकता।

कोई कोई बच्चे सरदी लग जाने से मर जाते हैं।
उनकी माँ ने उन्हें ऋतु के अनुसार कपड़े नहीं पहनाये इसी
से इन बेचारों के प्राण संकट में पड़ गये। कुछ बच्चे
हानिकारक भोजन खाने के कारण मर जाते हैं। कुछ बच्चे
बीमार होने पर इसलिए शीघ्र मर जाते हैं कि उनकी
नासमझ माँ उनकी बीमारी का ठीक ठीक इलाज नहीं
कर सकती क्योंकि वे भूत, प्रेत या नजर लग जाने

के भ्रम में पड़ कर बच्चे को नीरोग करने के लिए वैद्य या डाक्टर की सम्मति नहीं लेतीं और इसी में रोग बढ़ता जाता है।

कुछ स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए [illegible] खिला दिया करती हैं, इससे भी उनका जीवन समाप्त हो जाता है।

कहाँ तक कहें, बच्चों के यथेष्ट पालन-पोषण की [illegible] न जानने से आज प्रतिदिन सैकड़ों बच्चे मर रहे हैं। [illegible] हम इस विषय की कुछ मुख्य मुख्य बातें लिखेंगे। लड़कियों को जब कभी बच्चों के पालन-पोषण का [illegible] करना पड़े तब उनको इन बातों पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिये।

बच्चों को ऐसे स्थान में रक्खो जहाँ की वायु शुद्ध और जहाँ न अधिक सर्दी हो और न अधिक गर्मी। [illegible] सोने लगें तब उनके मुंह को कपड़े से न ढको। [illegible] के सोने के समय आग मत जलाओ और न दीया [illegible] रात भर जलने दो इससे वायु बिगड़ जाती है। बच्चों को ऐसे स्थान पर न सुलाना चाहिए, जहाँ सीधी वायु का झोंका [illegible] हो क्योंकि इससे भी बड़ी हानि होती

है। प्रत्येक कमरे में छत के पास दीवार में एक छेद होना
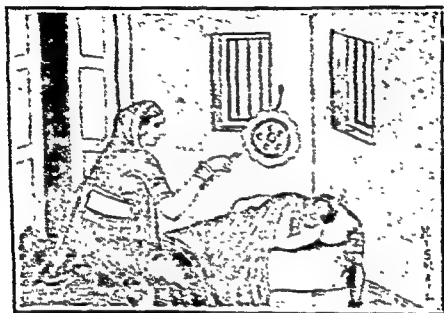
हवादार कमरा

चाहिये, जिसमें से होकर वायु और प्रकाश कमरे में बराबर आते रहें।

बच्चों को पैदा होते ही भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर ने पहले ही से भोजन तैयार कर रक्खा है। कुछ दिनों तक माता का दूध ही पी कर वे आनन्द से रह सकते हैं।

पिलाया जाना अच्छा है। इससे दूध अच्छी तरह पचेगा और भूख ठीक समय पर लगेगी। सोते हुए बच्चे को जगा कर या सोते ही सोते दूध पिलाना बहुत हानिकारक है। जब बच्चे के मुँह में सम्पूर्ण दाँत निकल आवें तो माता का दूध पिलाना बन्द कर देना चाहिए और उनको धीरे धीरे थोड़ा थोड़ा करके दाल, भात और रोटी खिलाने की आदत डालनी चाहिए। यह भोजन भी उनको ठीक समय पर थोड़ा थोड़ा दिन में तीन चार बार मिलना चाहिए। कुछ स्त्रियाँ बच्चों को इतना अधिक भोजन खिला देती हैं कि उनके पेट निकल आते हैं और वे रोगी हो जाते हैं। जब बच्चा कुछ खाने पीने लग जाय तब भी दूध का पिलाना बन्द नहीं करना चाहिए और बकरी या गाय का दूध [illegible] उनको पीने के लिए देना चाहिए। बच्चों को अधिक [illegible] मसालेदार या कड़वी चीज़ें न खिलाना चाहिए। इससे उनकी [illegible] हो जाती है।

बच्चों को प्रतिदिन [illegible] पानी से [illegible] कराना चाहिए। [illegible] बच्चों को [illegible] कराना चाहिए [illegible] है। [illegible] बच्चों का मुँह और आँखें धो देना चाहिए। आँखों को न [illegible]

उसमें रोग पैदा हो जाते हैं । बच्चे को नहला कर
कपड़े से उसका शरीर पोंछ डालना चाहिए। जिन
का शरीर शुद्ध नहीं रहता, उनको सदा म
घेरे रहती हैं, उनको गोद में लेने से घृणा
होती है। स्वच्छता न रहने ही से बच्चों की नाक
लगती है।

बच्चों के पहनने के कपड़े सदा शुद्ध रहने चा
उनके कपड़े बहुत कसे हुए नहीं होने चाहिए।
उनके अंगों के बढ़ने में बाधा पड़ती है, और कपड़े
ढीले भी न हों कि बच्चे के हाथ पाँव हिलाने से फँस
जब कपड़े पेशाब से भीग जायँ तब उन्हें शीघ्र
डालना चाहिए। ऋतु के अनुसार मोटे और महीन
बच्चों को पहनाने चाहिए।

छोटे बच्चों को उनके इच्छानुसार अधिक सो
चाहिए। सोने के लिए अफीम खिलाना अत्यन्त
है। यह निश्चय समझो कि बच्चे को जब कोई
है, तभी उसे नींद नहीं आती। अतएव अफीम न
कर उसका कष्ट दूर करने का प्रयत्न करना अ
सोते हुए बच्चे को कभी नहीं जगाना चाहिए
हानि होती है बच्चे को बिठाने पर निस्त सेवा

इससे खाया पिया पदार्थ शीघ्र पच जाता है। बच्चों का बिछौना स्वच्छ होना चाहिए।

बच्चा जब चलने फिरने लगे, तब उसे खूब खेलने कूदने देना चाहिए। जो बालक खेलता कूदता नहीं वह सुस्त और रोगी बना रहता है। बच्चों से छोटे छोटे काम भी कराते रहना चाहिए। काम कराने से वे बड़े प्रसन्न रहते हैं। बच्चों के साथ खेलना, हँसना और बातें करना बहुत अच्छा है, इससे उनको बड़ा आनन्द आता है। जो बालक प्रसन्न रहते हैं वे ही नीरोग रहते हैं।

यदि किसी कारण से बच्चा बीमार हो जाय तो उसे चुपचाप पड़ा रहने देना चाहिए और शीघ्र ही किसी अच्छे वैद्य से सम्मति लेकर उसको दवा देनी चाहिए। बहुत सी स्त्रियाँ बच्चों की बीमारी को भूत प्रेत या नज़र का लग जाना समझ कर मूर्खों से झाड़ा फूँका दिलाया करती हैं, यह बड़ी मूर्खता की बात है इससे बच्चों की बीमारी घटने के बदले बढ़ती ही जाती है बच्चों को कभी रोने देना नहीं चाहिये

बच्चों का दूध [illegible] या [illegible] या दूध [illegible] के समय कभी [illegible] न देना चाहिए [illegible] [illegible] बकने देना चाहिए और न [illegible] [illegible] [illegible] देना

चाहिए। बच्चों में ऐसी आदत डालनी चाहिए कि वे [illegible] माता पिता के आज्ञाकारी हों।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—विधि, प्राणघातक, [illegible] पाचन-शक्ति और इच्छानुसार।

२—इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—तनिक, [illegible] चिरजीवी, सम्मति, हानिकारी, चुपचाप।

३—बच्चों के पालन-पोषण में किन किन बातों को [illegible] विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ?

४—बच्चों की बीमारी में क्या करना चाहिए ?

१८—पति की सेवा का उपदेश

अनसूया के पद गहि सीता।
मिली बहोरि सुसील बिनीता॥
ऋषि पत्नी मन सुख अधिकाई।
आशिष देइ निकट बैठाई॥ १॥

कह ऋषि बधू सरल मृदु बानी।
नारि धरम कछु व्याज बखानी॥

मातु-पिता-भ्राता हितकारी।
मित सुख-प्रद सुनु राजकुमारी ॥ २ ॥

अमित दान भरता वैदेही।
अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धरम मित्र अरु नारी।
आपद काल परखिये चारी ॥ ३ ॥

वृद्ध रोग-बस जड़ धन हीना।
अंध बधिर क्रोधी अति दीना।
ऐसेहु पति कर किय अपमाना।
नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥ ४ ॥

एकै धर्म एक व्रत नेमा।
काय बचन मन पति पद प्रेमा।
जग पतिव्रता चार विधि अहहीं।
वेद पुरान सन्त सब कहहीं ॥ ५ ॥

उत्तम के अस बस मन माहीं।
सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं।
मध्यम पर पति देखै कैसे।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥ ६ ॥

धर्म बिचारि समुझि कुल रहई।
से निकृष्ट तिय श्रुति अस कहई॥
बिनु अवसर भय ते रह जोई।
जानेहु अधम नारि जग सोई॥ ७॥

बिनु श्रम नारि परम गति लहई।
पतिब्रत धरम छाँड़ि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जनमि जहँ जाई।
बिधवा होय पाय तरुनाई॥ ८॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—लहि, विनीता, स्वाद, हितकारी, सुखप्रद, अमित, अधम, आपत्काल, बधिर, अपमान, कार्य, पतिव्रता, निकृष्ट, प्रतिकूल, और तरुनाई।

२—वर्तमान हिन्दी के रूप बताओ—करता, परखिये, धरम छाँड़ि और जनमि।

३—तीसरे छन्द का अर्थ बताओ।

४—अनसूया जी ने सीता जी को क्या उपदेश दिया था इसे संक्षेप में बताओ।

१६—जोधपुर नगर

जोधपुर राजपूताने के बड़े और प्रसिद्ध देशी राज्यों में परिगणित किया जाता है। सम्पूर्ण राज्य का प्राचीन नाम मरुदेश अर्थात् रेगिस्तान देश अथवा मारवाड़ है। जोधपुर इसी मरुदेश की राजधानी और प्रधान नगर है। जोधपुर शहर को बसे हुए काफी समय हुआ है। इसकी नींव सन् १४५८ ई० में जोधा जी नामक एक राठौर वंश के प्रसिद्ध वीर ने डाली थी। इससे पूर्व राज्य की राजधानी मंडोर नाम के नगर में थी, जो वर्तमान जोधपुर से ६ मील की दूरी पर है। वहाँ पर मरुदेश के पुराने राजाओं के देवल अथवा स्मारक-भवन अब तक विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त मंडोर में प्राचीन दुर्ग के भग्नावशेष भी हैं। मंडोर [illegible] भी एक ऐतिहासिक स्थान है। [illegible]

[illegible]

पर मंदोर नामक प्राचीन मरुदेश की राजधानी है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

यहाँ पर, जैसा कि अभी कह चुके हैं, जोधपुर के राजाओं, तथा रानियों की स्मृति में मन्दिर से बने हैं जिनके बाहर उनके जन्म-मरण आदि के सम्वत् दिये हैं।

इसके सिवाय यहाँ एक बड़ा बाग़ है, जिसके अन्दर ग्रीष्म की दोपहर में भी शीतल छाया रहती है। श्रावण के महीने में दो सोमवारों को यहाँ मेले लगते हैं, तब यहाँ ठसाठस भीड़ होती है। मेले के दिनों में जोधपुर से मंदोर तक कई स्पेशल ट्रेनें आती जाती हैं।

मंदोर के बाग़ में एक पहाड़ी-भाग है जिसे काट कर अनेक राजपूत वीरों तथा देवी-देवताओं की मूर्तियाँ गढ़ ली गई हैं।

जोधपुर में भी कई स्थान देखने योग्य हैं। शहर कम से कम ६ मील के बीच में बसा है। बीच में कुछ भागों में पहाड़ियाँ भी आ गई हैं। पश्चिम की ओर एक पहाड़ी प० जोधाजी का बनवाया हुआ किला है। इसी के नीचे से बस्ती आरम्भ हो जाती है शहर के कुछ भाग, जो प्राचीनतर है, अधिक घने हैं। बीच-बीच में कई पक्के

कई मील तक चली गई हैं। वहाँ से पूर्व की ओर दो मील पर राज्य के उच्च कर्मचारियों के आवास हैं। वहीं पर अँग्रेज़ी सरकार के प्रतिनिधि रेज़ीडेंट की कोठी है। राज्य की कचहरियाँ, दफ़्तर, कालेज, स्कूल, रेलवे-स्टेशन तथा राजप्रासाद भी इसी सड़क पर हैं।

जोधपुर जाने वाले यात्री को क़िला, गिर्दी-कोट बाज़ार, अजायबघर तथा चाँदपोल—यह मुख्य मुख्य चीज़ें अवश्य देखनी चाहिए।

क़िला शहर की एक सीमा बनाता है। ६०० फ़ीट के लगभग ऊँची पहाड़ी पर वह स्थित है। ऊपर क़िले तक पहुँचने के लिये सुडौल रास्ता बना दिया गया है। मोटर, ताँगे आदि का पथ अलग बना है। क़िले के भीतर सीलाख़ाना, मोतीमहल, जवाहरख़ाना विशेष रूप से देखने योग्य हैं। सीलाख़ाना में सैकड़ों प्रकार की ढालें, तलवारें, बन्दूकें, भाले तथा कवच रक्खे हैं। इन पर सोने चाँदी की बड़ी अच्छी कारीगरी है। इसके सिवाय वे इतने भारी हैं, कि साधारण बल वाला पुरुष उन्हें सरलता से उठा तक नहीं सकता, उनका प्रयोग करना तो दूर की बात है।

मोतीमहल में तीन बड़े कमरे हैं, जिनकी दीवारों तथा छतों पर सोने की अनुपम कारीगरी है।

यहा भी किले से कुछ उत्तर की ओर हट कर ऊँ
पहाड़ी पर है। यह संगमरमर पत्थर की इमारत है। पि
शताब्दी के अन्तिम भाग में यशवन्तसिंह नाम के प्रसिद्ध ज
पुर नरेश हो गये हैं, उनका समाधि-स्थान इसी थड़े में।
जितने राजा स्वर्गवासी होते हैं, उनकी समाधि इसी के।
दी जाती है।

यहां एक अत्यन्त भव्य भवन है। यह एक ऊँचे
चौड़े चबूतरे के ऊपर निर्मित है। पास ही एक छोटी
हरी-भरी स्थली और फुलवाड़ी है। उसके मध्यभाग में
फुहारा है। चारों ओर संगमरमर की चौकियाँ पड़ी हैं,।
पर बैठ कर दर्शकगण वायु सेवन करते हैं।

थड़े के पीछे एक सरोवर है, वहाँ तक सीढ़ियाँ गई
वर्षा-ऋतु में यह स्थान परम रम्य बन जाता है।

गिर्दीकोट बाज़ार शहर के मध्य भाग में एक ?
चौक में है, जिसके दो फाटक हैं। इसके चारों ओ
ओर रास्ता गया है, और आस पास दुकानें हैं। जो
यहां एक अजायबघर भी अपने ढंग का अनूठा है। इ
इन वर्षों बहुत से नये हुए। दिन दिन इसकी
होती जा रही है। इसमें जोधपुर मारवाड़ के कला-कौ
के नमूने हैं। एक चित्रशाला भी है, जिसमें चित्रों

संग्रह काफ़ी अच्छा है। इसके सिवाय अजायबघर में पुरातत्व विषयक विभाग भी है, जिसमें सैकड़ों विभिन्न प्रान्तों से लाई हुई प्राचीन मूर्तियाँ तथा शिला-लेख एकत्रित किये गये हैं।

चाँदपोल जोधपुर शहर के एक मुहल्ले का नाम है, जो एक पहाड़ी पर स्थित है। वहाँ जाते समय शहर का घना मध्य भाग पार करना पड़ता है। यहाँ द्रष्टव्य बात यह है कि वहाँ एक ऐसी सड़क से जाना होता है जो वक्राकार हो कर क्रमशः अत्यधिक ऊँचाई पर पहुँचाती है। ऊपर से शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर देख पड़ता है। रात्रि में जब शहर भर में बिजली के लैम्प जल जाते हैं, तब वहाँ से दीपावली सी देख पड़ती है. एवं चतुर्दिक मरुभूमि से परिवृत्त होने पर भी जोधपुर कतिपय प्राकृतिक सुविधाओं के कारण उस शुष्कता से मुक्त है, जो अन्य इसी प्रकार के स्थानों में रहती है।

वास्तव में यहाँ की वायु में नीरसता अथवा शुष्कता तो अवश्य है, किन्तु यहाँ के निवासी बड़े सरस हृदय हैं। गान-विद्या, चित्रकारी, हस्त-कौशल तथा अन्य ललित-कलाओं की ओर लोगों की अच्छी प्रवृत्ति है। प्राचीन काल में जिस वीरता के लिए राजपूताना देश भर में विख्यात था, उसके

२०–शिक्षा की आवश्यकता (१)

एक ही महल्ले और एक ही घर में रहने वाली बहुत सी लड़कियों के स्वभाव भिन्न भिन्न होते हैं। इसका कारण क्या है ? दो बहनों में एक की लोग प्रशंसा करते हैं और दूसरी की निन्दा, इसका क्या कारण है ? तुम्हारे महल्ले में जो श्यामा नाम की लड़की रहती है उसकी सभी बड़ाई करते हैं। उस दिन दो तीन स्त्रियाँ आपस में बातें करती थीं और कहती थीं कि श्यामा तो लक्ष्मी है। परन्तु मनोरमा की बड़ाई कोई नहीं करता। इसका कारण क्या है ? न तो श्यामा किसी को कुछ देती है और न मनोरमा किसी से कुछ छीन ही लेती है। तो भी लोग श्यामा पर इतने प्रसन्न और मनोरमा पर इतने अप्रसन्न क्यों रहते हैं ?

एक दिन मनोरमा की माँ उससे चिढ़ी हुई थी और उसे झिड़कियाँ देती हुई कह रही थी कि देख तो, श्यामा कैसी अच्छी लड़की है, महल्ले में चारों ओर उसकी बड़ाई हो रही है। तू उसे काली कहती है और अपने गोरे चमड़े पर फूली रहती है। मैंने तुझे बार बार समझाया कि गोरा चमड़ा कोई चीज नहीं, गुण सब से अच्छे हैं। जिसमें गुण नहीं है वह गोरी हुई भी तो उसके

गोरी होने से किसी को क्या लाभ हो सकता है ?
इन बातों को सुन कर प्रसन्न नहीं हुई। वह चिढ़ गई और
अपनी माँ से रूठ कर किसी दूसरी जगह चली गई।

मनोरमा की माँ की बातों से मालूम हुआ कि श्यामा
की प्रशंसा इसलिए होती है कि उसमें अच्छे गुण हैं, और
मनोरमा में अच्छे गुण नहीं हैं। इस कारण उसकी निन्दा
होती है।

लोगों का विश्वास है कि अच्छे गुण पूर्वजन्म
संस्कार से मिलते हैं। क्योंकि बहुत से अच्छे घरों
लड़कियों में अच्छे गुण नहीं होते और बहुत से छोटे
की लड़कियाँ गुणवती होती हैं। परन्तु तुम
को ऐसा नहीं समझना चाहिये। अच्छे गुणों के होने
दो कारण होते हैं, एक तो अच्छी संगति और
अच्छी शिक्षा।

अच्छी संगति सब को नहीं मिल सकती, कि
अच्छी शिक्षा पाने में किसी को कुछ भी रुकावट नहीं
अच्छी संगति से उन्हीं में अच्छे गुण आ सकते हैं जि
अच्छी संगति पाने का अवसर है। जिन्हें अच्छी स
पाने का अवसर नहीं मिला व बिचारी कोरी निर्गुण

बनी रह जाती हैं। अतएव पढ़ना चाहिए, पढ़ने से सबको अच्छी शिक्षा मिलती है और गुणवती बनने का अवसर मिलता है। देखा गया है कि जो लड़कियाँ बहुत बुरी समझी जाती थीं, उनसे कोई बोलता भी न था, परन्तु पढ़ने ही से वे बड़ी गुणवती हो गयी हैं। इसी कारण हम भी कहते हैं कि तुम सब पढ़ो और गुणवती बनो। जिससे लोग तुम्हारी भी बड़ाई करें।

पुस्तकों को रट लेना ही पढ़ना नहीं है। किसी ने पुस्तकें रट लीं, इससे उसको कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। पढ़ने का मतलब यह है कि पुस्तकों में लिखी हुई अच्छी अच्छी बातें जाने और उन्हीं के अनुसार काम करे। भली बातें सीखे और बुरी बातें छोड़ दे, इसीलिए लोग पढ़ते हैं। जिनसे पढ़ लिख कर ये बातें न सीखीं उसका पढ़ना और न पढ़ना दोनों बराबर है।

पढ़ने से दो बातें सामने आती हैं, एक तो अच्छे अच्छे गुणों से होने वाले लाभ और दूसरे बुरी आदतों से होने वाली हानियाँ। जो पढ़ कर अच्छे गुणों को सीखती हैं और बुरी आदतों को छोड़ती हैं उन्हीं की प्रशंसा होती है, सब लोग उन्हीं का आदर करते हैं।

समता, मितव्यय, सहनशीलता, उदारता, प्रेम आदि

गुण यों तो सभी के लिए लाभदायक हैं, परन्तु बालिकाओं के लिए इन गुणों की आवश्यकता है।

किसी पर तुमको क्रोध आया, तुम उससे झगड़ पड़ीं। अब तुममें और उसमें विरोध हो गया। वह सदा यही बात सोचा करेगी कि किस तरह तुम्हारी हानि होगी, तुम भी उससे द्वेष करने लगोगी। किस तरह उसकी हानि होगी यही बात तुम्हारे हृदय को दिन-रात हिलाया करेगी। तुमको और उसको दोनों को अच्छी अच्छी बातें सोचने का अवसर नहीं मिलेगा; न अच्छे कामों के करने का, किन्तु दिन रात अपने विरोधी को नीचा दिखाने का प्रयत्न होता रहेगा। वह तुम्हारी बुराइयाँ अपनी सखियों से करेगी और तुम उसकी बुराइयाँ अपनी सखियों से। इसका फल बड़ा भयानक होता है। दलबन्दी हो जाती है। विरोध के अच्छे अच्छे गुण भी विरोध वश छिपाये जाते हैं, उसके अच्छे गुणों पर पर्दा डालने का प्रयत्न किया जाता है। तुम्हारा हृदय कलुषित हुआ और उसका भी हृदय कलुषित हुआ दिन रात चिन्ता बनी रहती है। सोचो! थोड़े से [illegible] कितनी हानियाँ उठानी पड़ीं। यदि तुम उससे [illegible] यह बात भलीभाँति [illegible] हृदय में तुम्हारी [illegible]

का अधिकार हो जायगा। वह तुमको देवी समझने लगेगी। वह तुम्हारी हो जायगी, तुम्हारे कहे अनुसार वह काम करने लगेगी। अब तुम उसके दोषों को भी हटा सकती हो और उसके द्वारा और भी काम पूरा करा सकती हो। ध्यान से देखो, क्षमा कैसा अच्छा गुण है। इससे कितने लाभ होते हैं।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ और उनको वाक्यों में प्रयोग करो—संस्कार, विरोध, उदारता, दलबन्दी, हृदय हिलाना और गुणों पर पर्दा डालना।

२—कुछ लोगों का ख्याल है कि अच्छे गुण पूर्वजन्म के संस्कार से मिलते हैं, क्या यह ठीक है?

३—अच्छे गुणों के होने के लिए किन दो कारणों का होना आवश्यक है?

४—क्या पुस्तकों को रट लेना ही पढ़ना कहा जा सकता है?

ई लड़ाई अन्त, अन्त में सुलह हुई दोनों दल में।
भेद खुला चमगीदड़ का सारा सब लोगों में पल में॥
तब से वह ऐसा शर्माया दिन में नहीं निकलता है।
अन्धेरे में छिप कर चलता नहीं किसी से मिलता है॥
समय पड़े जो दोनों दल की करते हैं 'हाँजी हाँजी'।
वे चमगीदड़ के समान दोनों की सहते नाराजी॥

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—चमगीदड़ क्या कह कर पशुओं से मिला और क्या कह कर चिड़ियों से मिला था ?
२—चमगीदड़ क्यों शर्माया ?
३—इस कविता से क्या शिक्षा मिलती है ?

२२–शिक्षा की आवश्यकता (२)

[illegible]

करती हैं। यह बात अच्छी नहीं है। कोई भी माता-पिता ऐसा नहीं होगा जो अपने बच्चों को खिलाना-पिलाना, अच्छे अच्छे कपड़े और गहना पहनाना न चाहता हो। यदि वे तुमको अच्छे कपड़े नहीं देते तो इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम पर स्नेह नहीं करते; किन्तु इसका ठीक ठीक यही अर्थ है कि वे अच्छे कपड़े ख़रीद नहीं सकते। फिर जब तुम माता-पिता से अच्छे कपड़ों के लिए हठ करोगी तब तुम्हीं बतलाओ उनको कितना कष्ट होगा। और इस प्रकार फ़िज़ूल ख़र्चा सीखने से तुमको अपने आगे के जीवन में कितना कष्ट उठाना पड़ेगा। अतएव तुमको अभी से इस बात की ओर ध्यान रखना चाहिए कि तुम जो कुछ ख़र्च करो समझ बूझ कर करो, तुम्हारे पास जितने पैसे हों उनमें से आधे किसी समय पर काम आने के लिए रख छोड़ो, आधे ख़र्च करो। जिनके पास पैसे रहते हैं, लोग उन्हीं का आदर करते हैं। संसार की जिन बड़ी बड़ी स्त्रियों का तुम जीवन चरित्र पढ़ती हो वे सब किफ़ायत [illegible]

[illegible]

२—शिक्षा की आवश्यकता किस लिए है ?

३—शिक्षा न मिलने से क्या हानि है ?

४—मितव्ययी होना क्यों आवश्यक है ?

२३—हमारा शरीर

एक दिन संध्या समय इन्दिरा और उसकी माँ, दोनों अपने घर के द्वार पर खड़ी थीं। इतने में शान्ति नाम की एक लड़की उसी के द्वार के आगे से भागती हुई दिखाई दी, उसके पीछे एक कुत्ता भूँकता हुआ दौड़ता चला आता था।

इन्दिरा और शान्ति दोनों साथ साथ पाठशाले में जाती हैं। आज शान्ति को पाठशाले से आने में कुछ देर हो गई। शान्ति बड़ी चतुर लड़की है। उसने रास्ते में सोते हुए कुत्ते को पत्थर उठा कर मारा। कुत्ता उसको काटने के लिए भूँकता हुआ उसके पीछे दौड़ा। शान्ति आगे आगे भागती जाती थी और कुत्ता उसके पीछे पीछे दौड़ता जाता था।

जब वह इन्दिरा के [illegible] के सामने पहुँची तब [illegible] कुत्ते को मार कर उसका पीछा छुड़ा दिया। तब शान्ति

अपने घर चली गई तब इन्दिरा अपनी माँ के पास आ
कहने लगी—माँ! शान्ति क्यों भागी जाती थी?

उसकी माँ ने कहा—बेटी! भागती न, तो कु
उसे काट लेता। इन्दिरा ने कहा—यह तो ठीक है, प
वह अपने पैरों से दौड़ रही थी। पैरों को कैसे जान
कि कुत्ता उसे काटने आता है? इन्दिरा के प्रश्न को
कर उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा–बेटी!
इस प्रश्न का उत्तर बड़ा रोचक है। तू सुनेगी तो तुझे
नई बातें भी मालूम हो जायेंगी, और तू प्रसन्न भी
जायगी। अच्छा, ध्यान लगा कर सुन, मैं तुझे इ
कारण बताती हूँ।

इन्दिरा की माँ, बेटी का हाथ पकड़ कर छत
ऊपर ले गई और बैठ कर वह इस प्रकार बातें
लगी—

यह शरीर जीव के रहने का एक घर है। जीव इ
शरीर का राजा है। मन, राजा का मन्त्री है। शरीर
राजा के लिए कई नौकर चाकर हैं; ये सब मन के आधी
हैं। मन जैसा करता है वे वैसा ही करते हैं। प्रत्येक नौक
का काम अलग अलग है। प्रत्येक नौकर अपना
काम करता है। इन नौकरों के नाम ये हैं– आँख, का

ाक, मुँह, जीभ, हाथ और पैर। आँख का काम देखना, ान का काम सुनना, नाक का काम सूँघना और साँस ेना, मुँह और जीभ का काम स्वाद बताना और सच ोलना, हाथ का काम करना और पैर का काम ्लना है। सब नौकर अपना अपना काम ठीक ठीक करते ैं और आपस में बड़ा मेल रखते हैं। समय पड़ने पर वे ्पने साथियों की सहायता करते हैं।

अब तुम इन बातों को इस प्रकार समझो। शान्ति का मन अभी बुद्धिमान नहीं हुआ है। वह बड़ा चञ्चल और खिलाड़ी है। उसने राह में कुत्ते को सोते हुए देख कर हाथ को सूचना दी कि पत्थर उठा कर उसे मारे। हाथ ने उसके आज्ञानुसार वैसा ही किया। जब कुत्ते के शरीर में चोट लगी तब उसके मन ने उसके पैरों को आज्ञा दी कि तू शान्ति के पीछे दौड़, और जब कुत्ता शान्ति के पास पहुँचा तब उसका मन उसके मुँह को आज्ञा देता है कि तू शान्ति के [illegible] और अपनी चोट [illegible]

[illegible]

यहाँ से भागो। बस, उसके पैर भागने लगे। और पैरों ने भाग कर शान्ति को बचा लिया। तुम्हारे मन ने तुम्हारे मुँह को कुत्ते को डाटने की आज्ञा दी। तुम्हारी जीभ और मुँह ने मिलकर कुत्ते को डाँटा, कुत्ते के मन ने उसके पैरों को ठहरने की आज्ञा दी और कुत्ता ठहर गया। देखो, आँख, कान, नाक, मुँह और पैर ने मिल कर तुम्हें काम किया। यदि आँख न देखती या पैर न भागते तो कुत्ता शान्ति को काट खाता।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—शरीर का राजा कौन है?

२—आँख, कान, नाक, मुँह, जीभ, हाथ और पैर इन सब का काम क्या है?

३—शरीर के कौन कौन रक्षक हैं?

२८—मीराबाई के पद

(१)

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैना बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर बैजन्ती माल॥

क्षुद्र-घंटिका कटितट शोभित नूपुर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भक्त बछल गोपाल॥

(२)

हरि, तुम हरो जन की भीर।
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर॥
भक्त-कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर॥
हिरनकस्यप मारि लीन्हो धर्‌यो नाहिन धीर॥
बूड़ते गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर॥
दासि मीरा लाल गिरिधर, हरो जनकी पीर॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—बिसाल, अधर, राजति, बैजन्ती, छुद्र-घंटिका, भीर और पीर।

२—प्रचलित हिन्दी में इनके रूप लिखो—मोहनी, मूरति, धर्‌यो।

विज्ञानाचार्य
डाक्टर जगदीशचन्द्र वसु

सुख, सर्द-गर्म, प्यार-प्रहार आदि का कुछ अनुभव नहीं होता। आपने इस धारणा को निर्मूल साबित कर दिया है। आपने एक ऐसी कल बनाई है, जिसके सहारे पेड़-पौधों की चेतनता का पक्का प्रमाण मिलता है।

आपने देश-देश में घूमकर लाखों विज्ञान वेत्ताओं को दिखला दिया है कि पेड़-पौधे भी सुख-दुःख आदि का उसी प्रकार अनुभव करते हैं, जिस प्रकार हम तुम मनुष्य-प्राणी। आपके आविष्कार से पता चलता है कि कष्ट देने पर, टहनियाँ काटने या कुल्हाड़ा चलाने पर पेड़-पौधे उसी प्रकार कष्ट से सिहर और काँप उठते हैं, जिस प्रकार हाथ कट जाने या घाव लगने पर मनुष्य; तथा पानी पाने या खाद डालने पर वे उसी प्रकार खिल उठते हैं, जिस प्रकार हम तुम दूध पीने या पेड़ा-बर्फ़ी खाने पर।

यही नहीं, उन्हें सर्दी-गर्मी, धूप-छाँह, दिन-रात आदि का भी अनुभव होता है। बेहोशी की दवा देने पर वे भी, मनुष्यों की तरह बेहोश हो जाते हैं; और उस बेहोशी की हालत में उन्हें भी कष्ट आदि का कुछ अनुभव नहीं होता।

हाल ही में आपने पेड़-पौधों में सांप के विष के प्रभाव

या वास्ता ? सुनने में तो तुम्हारा कथन सच जँचता है, किन्तु ज़रा ग़ौर करो। यह जीवन क्या है—एक लड़ाई है। जो जितने बड़े लोग हैं, उनके जीवन की लड़ाई भी उतनी ही घमासान होती है। फिर, कोई नया आविष्कार करना क्या है, संसार के विद्वानों से एक विकट युद्ध छेड़ना है—लोगों के पुराने ज्ञान के क़िले को तोड़कर एक नया ज्ञान-महल बनाना है।

जिस समय जगदीश बाबू ने यह आविष्कार किया, संसार के विद्वानों में खलबली मच गई। उन्हें आपके कथन पर विश्वास न हुआ। बस, आप अपने कथन की सचाई साबित करने के लिए यहाँ से विलायत चले। साथ में अपने औज़ारों और कलों को ले लिया था। किन्तु इस बारीक बात को समझाने वाली कलें भी बहुत बारीक थीं—जहाज़ पर चढ़ाने-उतारने की हलचल में टूट गईं।

अब आप विलायत पहुँचे, देखा कि कलें टूटी पड़ी हैं। तब तक विलायत में शोर मच गया था कि श्रीजगदीशचंद्र वसु अपने आविष्कार की सचाई साबित करने आ रहे हैं। हजारों विद्वान प्रतिक्षा में बैठे थे। कलें टूट जाने से आप बहुत घबराए, किन्तु कोई चारा न था। लज्जित और

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—श्री जगदीशचंद्र वसु ने कौन सा महत्वपूर्ण आविष्कार किया है ?

२—पेड़-पौधों में चेतनता होने के क्या प्रमाण हैं ?

३—इन शब्दों के अर्थ बताओ और इनका वाक्यों में प्रयोग करो—दाँतों उँगली काटना, विज्ञान-वेत्ता, हृदय में जल आना, नाम का डंका बज गया, उल्टे पाँव घर लौटना, निरुत्तर होना और आविष्कर्ता।

४—संसार में जगदीश बाबू के नाम की चर्चा क्यों हुई ?

२६—खाद

तुमने अपने घरों में यह सुना ही होगा कि खेतों के लिए खाद की बड़ी आवश्यकता होती है। जिस तरह रेलों का काम बिना [illegible] और [illegible] के नहीं चल सकता, उसी तरह बिना खाद के भी खेती का काम नहीं चल सकता। खेत में जब तक अच्छी खाद न डाली जाय, तब तक उसमें अच्छी पैदावार नहीं हो सकती। खाद से ज़मीन की [illegible] है और [illegible] पैदावार बढ़ती है [illegible] खाद [illegible] ज़मीन [illegible] है

और वह बीजों को अच्छी तरह उगा नहीं सकती। इ
लिए खेतों को खाद से बलवान बनाना किसान का
काम है।

पहले लोग खेत में एक बार फ़सल पैदा करके
छोड़ दिया करते थे, और कम से कम एक वर्ष
उसमें दूसरी फ़सल बोते थे। एक वर्ष तक खेत
ज़मीन पड़ती पड़ी रहती थी जिससे उसे आराम मि
था और वह अपनी शक्ति, जो फ़सल के पैदा कर
खर्च हो चुकी थी फिर से प्राप्त कर लेती थी, और
फ़सल के लिए वह तैयार हो जाती थी। पड़ती पड़े
खेतों में किसान लोग अपने जानवरों को वहाँ की
चरने के लिए छोड़ दिया करते थे। इन जानवरों के
इत्यादि से खेत को पर्याप्त खाद मिल जाती
साथ ही जो घास बच रहती थी, वह भी सड़-गल
खाद का काम करती थी। अब यह बात बहुत क
गई है, लोग खेतों को पड़ती छोड़ना तो दूर, वर्ष में
चार जोतते-बोते हैं। ऐसी अवस्था में यह बहुत ही आव
है कि खेत को पर्याप्त और उत्तम खाद से बल
बनाया जाय।

यह तो सभी को मालूम है कि गोबर का खाद

खादों से अच्छी होती है। इसे लगभग सभी किसान आसानी से तैयार कर सकते हैं। गोबर में खाद की सभी आवश्यक वस्तुयें हैं और गोबर प्रत्येक किसान के यहाँ पर्याप्त रहता है। परन्तु किसान लोग अपने गोबर से बहुत बड़े अंश से कंडे तैयार करते हैं जो जलाने के काम में आते हैं। यह उनकी भूल है। उन्हें पहले गोबर से अपने खेतों के लिए पर्याप्त खाद तैयार कर लेनी चाहिए. फिर बचे हुए गोबर को कंडे इत्यादि के काम में लाना चाहिए।

गोबर की खाद तैयार करना कोई कठिन काम नहीं। गाँव के बाहर खेत के पास एक बड़ा गड्ढा खोद कर गोबर जमा करते जाना चाहिए। वह आप ही आप सड़ना-गलना होगा, और थोड़े दिनों में उसमें खाद तैयार हो जायगी। अगर इसी के साथ तिनकों, [illegible] मिट्टी और राख भी मिला दी जाय, या कूड़ा-करकट भी इसी में डाल दिया जाय तो खाद और भी अच्छी तैयार हो सकती [illegible] खाद के [illegible] [illegible] है, इसमें खर्च भी कुछ अधिक नहीं होता [illegible] किसानों को [illegible] [illegible] पर्याप्त खाद तैयार कर लेनी चाहिए।

गोबर की खाद के अतिरिक्त और भी कई तरह की ऐसी खादें हैं, जो कम खर्च और सरलता से तैयार की जा सकती हैं। पत्तियों से भी खाद बनाई जाती है।

पत्ते की खाद को छोड़कर कूड़े-करकट की भी खाद उत्तम होती है। घास-फूस, कूड़ा-करकट और राख इत्यादि को एक गड्ढे में डाल कर सड़ा लेते हैं और फिर इसी को खाद के काम में लाते हैं। यह खाद भी बड़ी आसानी और कम खर्च से तैयार हो जाती है। अगर लोग ... ऋतु में थोड़ा कष्ट करें तो उत्तम खाद तैयार ... सकते हैं। इस ऋतु में पेड़ों से पत्ते सूख कर गिर... हैं। इन पत्तों को इकट्ठा कर के एक गड्ढे में सड़ा लि... जाय और इसी के साथ थोड़ा सा गोबर इत्यादि भी ... दिया जाय तो उत्तम खाद तैयार हो सकती है। खाद के लिए जो गड्ढा खोदा जाय वह कम से कम चार या पाँच गज़ लम्बा, ढाई या तीन गज़ चौड़ा और तीन या चार गज़ गहरा हो और नीचे की तरफ़ ऊपर के मुकाबले कम चौड़ा और ढालू रहे।

...गड्ढे में खाद के लिए जो चीजें छोड़ी जायँ वे फैलाकर ... जायँ। अगर गड्ढे में पहले घास-फूस का एक ... ऊपर डाल दिया जाय तो अच्छा है। जब गड्ढा

र जाय तब इसे प्रायः एक फुट ऊँची मिट्टी से ढक दिया जाय।

मरे हुए जानवरों की हड्डियों से भी बड़ी उत्तम खाद बन सकती है। दूसरे देश वाले हड्डियों की खाद बनाकर अपने खेतों में डाला करते हैं और इससे उनके खेतों की पैदावार कई गुनी बढ़ जाती है। अगर हमारे देश के लोग भी मरे हुए जानवरों की हड्डियों से खाद बना कर काम में लावें, तो बहुत बड़ा लाभ हो सकता है। लेकिन हड्डियों से खाद तैयार करना सरल नहीं है। इसमें खर्च भी अधिक पड़ता है और मेहनत भी अधिक लगता है।

गेहूँ इत्यादि के खेतों को इस खाद से बहुत ही अधिक लाभ पहुँचता है और इनकी उपज कई गुनी बढ़ जाती है।

यह खाद जिस खेत में एक बार भी डाल दी गई, [illegible]

[illegible]

सकती। यूरोप और अमेरिका में वैज्ञानिक ढंगों से क
प्रकार की खाद तैयार की जाती है, लेकिन हमारे यहाँ अ
ऐसा नहीं हो सकता। इसीलिए अभी हम उनका उल्ले
नहीं करते। सरकार की तरफ़ से कई जगहों में खे
के 'फार्म' खोले गये हैं, जिनमें नए उपायों से खे
करना सिखलाया जाता है। ज़मींदारों और अच्छे किसा
को चाहिए कि वे वहाँ जाकर उन उपायों को दे
और जानें।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—खाद से क्या लाभ है ?
२—खाद कितनी तरह से तैयार की जाती है ?
३—कौन सी खाद सरलता और कम खर्चे से तैयार हो
है ?
४—पत्तियों या घास फूस से खाद कैसे तैयार की जाती है
५—पड़ती ज़मीन किसको कहते हैं ?

२७—बेतार का तार

रेल के स्टेशन पर गाड़ी आने से पहले तार-बाबू के घ
में, टिक-टिक-टिक-टिक शब्द तुमने अवश्य सुना होगा।

तार बाबू अपनी उँगली से तार की कल को धीरे धीरे दबाते हैं, इससे टिक-टिक शब्द सुनाई पड़ता है। इस टिक-टिक शब्द से एक प्रकार का कम्पन पैदा होता है, जो बिजली के बल से, तार द्वारा, दूसरे स्टेशन पर पहुँचता है। वहाँ के तार-बाबू जब तार की कल को उँगली से दबाते हैं, ठीक वैसा ही टिक-टिक शब्द उसमें से निकलने लगता है। इस टिक-टिक शब्द को समझने के लिए, एक ख़ास शब्द-कोष होता है उसी के आधार पर पिछले स्टेशन के तार-बाबू की बात यहाँ के तार बाबू समझ जाते हैं और उसके अनुसार कार्रवाई करते हैं।

इस प्रकार तार द्वारा एक जगह से दूसरी जगह ख़बर भेजना अचरज भरा काम है। किन्तु यह सुन कर तुम्हें और अचरज होगा कि अब तो बिना तार के ही जहाँ वहाँ समाचार भेजे जाते हैं। इसमें तार की ज़रूरत बिलकुल नहीं पड़ती। ज़रूरत होती है केवल तार देने और तार प्राप्त करने की दो मशीनों की। तार टूट जाने पर, तार द्वारा ख़बरें भेजना असम्भव हो जाता है किन्तु बेतार के तार में ऐसा कोई झंझट नहीं होता है।

इस बेतार की कल के आविष्कार करने वाले हैं—इटली के मार्कोनी साहब। सन् १९०७ ईस्वी में इन्होंने इसका

बेगार के मार के स्मरन

३—बेतार के तार से समाचार कैसे भेजे जाते हैं ?
४—हिन्दुस्तान में बेतार के तार के स्टेशन कहाँ कहाँ हैं ?

२८—कवि

कौन ईश की भक्ति-सुधा का, कविता-स्रोत बहावेगा ?
कवि के विना स्वधर्म-प्रेम को, कौन खोल दिखलावेगा ?
कौन देश के मधुर प्रेम को, नर-उर में बैठावेगा ?
कौन विना कवि के स्वजाति का, सच्चा प्रेम बतावेगा ?
कौन पिता के गुरु-स्नेह को, पुत्रों को समझावेगा ?
कौन जननि का हृदय खोलकर, मातृ स्नेह दिखलावेगा ?
कौन सहोदर भ्राताओं का, उत्तम प्रेम सुनावेगा ?
कौन परम प्रिय मित्रों का, प्रिय पावन प्रेम बतावेगा ?
कौन सुकवि के विना प्रकृति का, सुन्दर दृश्य दिखावेगा ?
कौन [illegible] वर वीरों का, कीर्ति-सुधा बरसावेगा ?
कौन पतिव्रत नारी का, पति प्रेम प्रगाढ़ सुनावेगा ?
कौन [illegible] का [illegible], मन में याद दिलावेगा ?
कौन [illegible] बातें हमें सुनावेगा ?
कौन [illegible] फिर, आनन्द-स्रोत बहावेगा ?

बैठे हुए मृत्यु का रास्ता देख रहे हैं, मगर राना मरता नहीं। निदान बेटों ने पूछा—आपका दम काहे में अटक रहा है? राना ने कहा—मैंने काठियावाड़ के १२५ घोड़े अपने पुरोहितों को देने के लिए कहे थे। १०० घोड़े तो मार-मार कर दे दिये हैं, २५ और देने हैं। तुम देने का संकल्प लेलो तो मुझे तसल्ली हो और अभी प्राण निकल जायँ।

बेटे कुछ बच्चे नहीं थे, सब दाढ़ी मूँछ वाले हो चुके थे। मगर किसी को संकल्प लेने का साहस न हुआ। तब बाप को संकट से छुड़ाने के लिए उसकी लड़की लालर कारी लेकर आगे बढ़ी और बोली कि दाजीराज, यह संकल्प मुझको दीजिए, और आप ठंडे ठंडे स्वर्ग सिधारिए। मैं आपका प्रण पूरा करूँगी।

राना [illegible] बेटी तू [illegible] का धन है; मैं तुझे ऐसे कठिन संकट में नहीं डाल सकता।

[illegible] आपकी ही धन हूँ, [illegible] पूरा कर [illegible]

[illegible] राना [illegible] लालर के हाथ [illegible]

छोड़ दिया। संकल्प छोड़ते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

जब बारह दिन हो गये तब लालर ने बाप की चिता पर जाकर अपनी ज़नानी पोशाक उतार दी, मरदाने कपड़े पहन कर बर्छा हाथ में ले घोड़े पर सवार हुई और काठियावाड़ में धाड़े (घोड़ों के झुण्ड) मारने लगी। धाड़े में जो घोड़ा हाथ लग जाता था उसे बाप की चिता पर फिरा कर पुरोहितों को दे देती थी।

ऐसा करते करते एक दिन उसका डेरा एक बरगद के पेड़ की गहरी छाँह में पड़ा था। उधर से एक जवान राजपूत आया और वह भी उसी छाँह में डेरा डालने लगा। इस पर लालर बर्छा तान कर उसके सामने खड़ी हो गई।

राजपूत—श्रीमान् छाँह तो बहुत बड़ी है। मेरे यहाँ ठहरने से आपकी कोई हानि नहीं है।

लालर—यह सच है परन्तु एक विद्यमान राजपूत के डेरे में दूसरे राजपूत का डेरा नहीं हो सकता। अगर राजपूती बल रखते हो तो आओ लड़ लो।

हुआ है। वह डेरा डालने नहीं देता, मैंने तो ऐसा राजपूत कभी नहीं देखा। मरने को तैयार है।

नौकर—विख्यात राजपूत को क्यों छेड़ते हैं? यहीं डेरा डाल लें।

राजपूत ने वहीं डेरा डाल कर सालर से मेल कर और फिर दोनों साथ रह कर धाड़े मारने लगे। मगर अलग ही रहते थे। एक दिन नौकर ने, जो नाई था, सालर को किसी तरह नहाते हुए देख लिया। उसने अपने सरदार से कहा, यह तो मर्द नहीं औरत है। राजपूत सुनकर दंग रह गया। मगर सालर की धाक दिल पर ऐसी बैठी थी कि नाई से कहा—चुप रह, यह बात फिर न कहना। यह कोई राजपूतनी है और विदेश में है, इसलिए हमको इसकी मदद करना चाहिए।

हम यहाँ यह भी बता दिये देते हैं कि यह राजपूत असल में मारवाड़ के राव मल्लीनाथ थे। उनका राज्य भी मुसलमान ने छीन लिया था। सालर का पता पाकर उनका दिल [illegible] था परन्तु इसके [illegible] आज [illegible] ही दिन ब दिन व [illegible] बढ़ गई थी कि नाम और पता पूछने की बात भी [illegible]

मे राजपूतानियाँ बड़ी बहादुर हो गई हैं। इन्होंने रजपूती के बड़े बड़े काम किये हैं और मर्दों का साथ दिया है।

लालर सुनकर उनका मतलब तो समझ जाती थी, पर कुछ जवाब नहीं देती थी। होते होते जिस दिन २५ घोड़ों की गिनती पूरी हो गई तो तीन घोड़े लूट में आये, लालर ने कहा—आज तक तुम्हारा हमारा साथ था अब हम चले जायेंगे।

मलीनाथ—अफसोस! क्या इतने दिनों साथ रहने का मोह छोड़ देंगे? अभी तो एक घोड़ा और लाना है। तीन में बराबर नहीं बँट सकते।

लालर—आप लाया करना, हम तो अपना डेढ़ घोड़ा ले लेंगे।

मलीनाथ—डेढ़ क्यों, सारा ही लेलो, हुनर में घोड़े की जान जाती।

लालर [illegible] आधा आधा बँटना ही [illegible] है

मलीनाथ [illegible] !

लालर [illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझे वो जितनी लकड़ी की ज़रूरत पड़ती है सब ले आता है। वह इसे सेवा कार्य कहता है। नियमानुसार उसे रोज़ किसी के साथ एक भलाई का काम करना पड़ता है और मेरी बहिन, अब तो नित्यप्रति अच्छा होता जाता है।

खंसाहा देवी—अरे मुझे लड़कों का खेलना कूदना बिलकुल नहीं भाता और अब तो लड़कियाँ भी इस तूफ़ान में शरीक़ होने लगीं। मेरा पुत्र सतीश हमेशा गर्लगाइडों पर हँसता है। अरे उनको चाहिए कि घर पर का काम करें। इस कूद फाँद में क्या रक्खा है।

सुशीला देवी—गर्लगाइडिंग में ठीक यही तो सिखाया जाता है। हमारी शान्ता ने चुटइयों के पट्टी बाँधना और अच्छे अच्छे व्यंजन बनाना सीख लिया है। थोड़ा बहुत बाग़बानी का काम भी कर लेती है। और यह देखिए उसी के हाथ के सिले हुए कपड़े हैं।

खंसाहा देवी—मेरी राय में यह तो कोई बुरी बात नहीं मगर झंडी हिलाने से क्या फ़ायदा है?

सुशीला देवी—आप इसे नहीं जानतीं। अगर हमारे दे

पर कभी दुश्मन धावा करे तो झंडी से सैकड़ों जानें भूख प्यास और मौत से बचाई जा सकती हैं। हमारा भारतवर्ष तो सोने की चिड़िया है। दूसरे देश वाले इसे हड़प कर जाने को हमेशा मुँह बाये बैठे रहते हैं।

खंखाड़ा देवी—यह काम मर्दों को करना चाहिए। मर्द काहे के लिए बने हैं।

सुशीला देवी—मर्द तो दुश्मन से लोहा लेते होंगे। अगर उनके चोट लग गई तो गर्लगाइड उनको उठा लायेंगी और मरहम पट्टी करेंगी। हर स्काउट और गर्लगाइड को स्वार्थ-त्यागी होना सिखाया जाता है। वह जो कुछ भी काम करती हैं उसमें दूसरों का सदा ध्यान रखती हैं।

खंखाड़ा देवी—अरे, अगर वे ऐसा करती हैं तब तो बड़ी अच्छी बात है, मगर मैं तो उनको अक्सर खेलते ही देखती हूँ।

सुशीला देवी—हम सबों को चाहे बूढ़ा हो चाहे जवान—खेलने कूदने की आवश्यकता पड़ती है और अगर खेल अच्छा है तो उससे शरीर [illegible] फायदा।

मुझे तो जितनी लकड़ी की ज़रूरत पड़ती है वह सब ले आता है। वह इसे सेवा कार्य कहता है। नियमानुसार उसे रोज़ किसी के साथ एक भलाई का काम करना पड़ता है और मेरी बहिन, अब वह नित्यप्रति अच्छा होता जाता है।

...लाड़ा देवी—अरे मुझे लड़कों का खेलना कूदना बिल्कुल नहीं भाता और अब तो लड़कियाँ भी इस तूफ़ान में शरीक होने लगीं। मेरा पुत्र सनीचर हमेशा गर्लगाइडों पर हँसता है। अरे उनको चाहिए कि वह घर का काम करें। इस कूद फाँद में क्या रक्खा है।

सुशीला देवी—गर्लगाइडिंग में ठीक यही तो सिखाया जाता है। हमारी आत्मा ने चुटकलों के पट्टी बाँधना और अच्छे अच्छे व्यंजन बनाना सीख लिया है। थोड़ा बहुत बागवानी का काम भी कर लेती है। और ... । टेलिफ़ नर्मी के हाथ के सिले ...

पर कभी दुश्मन धावा करे तो झंडी से सैकड़ों जानें भूख प्यास और मौत से बचाई जा सकती हैं। हमारा भारतवर्ष तो सोने की चिड़िया है। दूसरे देश वाले इसे हड़प कर जाने को हमेशा मुँह बाये बैठे रहते हैं।

खेलाड़ी देवी—यह काम मर्दों को करना चाहिए। मर्द काहे के लिए बने हैं।

सुशीला देवी—मर्द तो दुश्मन से लोहा लेते होंगे। अगर उनके चोट लग गई तो गर्लगाइड उनको उठा लायेंगी और मरहम पट्टी करेंगी। हर स्काउट और गर्लगाइड को स्वार्थ-त्यागी होना सिखाया जाता है। वह जो कुछ भी काम करती हैं उसमें दूसरों का सदा ध्यान रखती हैं।

खेलाड़ी देवी—अरे, अगर ये ऐसा करती हैं तब तो बड़ी अच्छी बात है, मगर मैं तो इनको अक्सर खेलते ही देखती हूँ।

सुशीला देवी—हम सभी को चाहे बूढ़ी हो चाहे जवान—खेलने कूदने की आवश्यकता पड़ती है और अगर खेल अच्छा है तो उससे शरीर को बड़ा फायदा

पहुँचता है। मैं आपके लिए लकड़ी लाए देती हूँ। मुझे भी चाय तैयार करनी है। हम लोगों के भी चाय पीने का समय आ गया है। (खिड़की से बाहर की तरफ़ देख कर) अरे! यह क्या बात है। बहिन खंदाड़ा जी आपकी बेटी पसीदन बड़ी घबराई हुई दौड़ती चली आ रही है और गर्लगाइड किसी को लादे हुए डोली पर लिए आ रही हैं। पीछे पीछे बहुत से बच्चे चले आ रहे हैं। मेरा ख़याल है कि वे अभ्यास कर रही हैं।

खंदाड़ा देवी—(खिड़की के बाहर देख कर) हे ईश्वर! यह भीड़ किस लिए इकट्ठी हो गई है।

सुशीला देवी—मालूम होता है कि कोई लड़का डोली पर लेटा हुआ है और उसके शरीर पर पट्टियाँ बँधी हुई हैं।

पसीदन—(दौड़ती हुई आकर) दीदी, ए दीदी! सनीचर के चोट लग गई। वह जामुन के दरख़्त से गिर गया है, उसकी टाँग टूट गई है। हाय! अब क्या होगा।

खंदाड़ा देवी—(घबरा कर रोने लगती है) हाय भगवान! अब क्या होगा हाय रे! अब मैं क्या करूँगी?

पुत्र सैल्यूट देती है। संखाड़ा देवी भी कुर्सी से उठ बैठती है और सुशीला भी नमस्ते करती है)।

कैप्टन—(सबों के नमस्कार का उत्तर देती हुई) बस, संखाड़ा जी आप तशरीफ़ रखिए। (खमीवा की तरफ़ आकर बँधी हुई पट्टियों को जाँच करती है) बहुत अच्छी, बिल्कुल सही, बिल्कुल दुरुस्त। संखाड़ा जी, आप ने देखा अगर ये लड़कियाँ गर्लगाइड न हो गई होतीं तो क्या ऐसी अच्छी पट्टी बाँध सकतीं? यह तुम्हारे लड़के की गड़बड़ लड़क हुई जाती और उससे तुम्हारे लड़के की टाँग और खराब हो जाती। आप देखती हैं कि लड़कियों ने टाँग को खपचियों से बाँध दिया है जिससे कि टूटी हुई हड्डियाँ खिसकने न सकें और न खाल को फाड़कर बाहर निकल जावें।

संखाड़ा देवी—हाय रे मेरा प्यारा बेटा! तुम्हारे दर्द तो नहीं होता?

सुशीला देवी—मीनाक्षी बन्दर आ गई है।

मीनाक्षी—[illegible] बिना [illegible] बन्दर बन्दर आ जावेंगे।

[illegible] सुशीला [illegible] पूछती है)

[illegible] यह देख न जाई?

मीरा—हम ने इस टोपी को अपनी साड़ी और टंटों से बनाया है।

ज्वाला देवी—मैं नहीं जानती तुमने यह सब कहाँ सीखा!

रतन—अरे यही बात क्या! हम लोगों ने तो बड़ी बड़ी बातें सीखी हैं। इस लड़के के हाथ में एक ख़ून की नस फट गई है। अगर कोई दूसरा होता तो उसके ऊपर मैला रूमाल बाँध देता, जिससे कि ज़ख़्म में और ज़हर फैल जाता। और कोई होता तो चोट को हिलाने डुलाने देता जिसका नतीजा यह होता कि ज़ख़्म और बढ़ जाता। किसी की समझ में यह भी नहीं आता कि ख़ून कैसे रोका जाय। मगर यह सब गर्ल-गाइडिंग की बदौलत है कि इन सबों ने इतनी गहरी चोट की मरहमपट्टी इतनी अच्छी तरह से कर दी।

ज्वाला देवी—क्या इस की चोट से ख़ून निकला है!

रतन—हाँ, बड़ी ज़ोर से ख़ून का [illegible] है [illegible] हुए हैं [illegible]

सुधीरा—जी हाँ, कैप्टन साहब।

कैप्टन—(खंबाटा को संबोधित करते हुए) पोटैशियम-परमैंगनेट से धुल जाने के बाद ज़ख्म में ज़हर नहीं फैलता। डाक्टर शायद ज़ख्म में टाँके लगायेगा। गर्लगाइडिंग इतनी बढ़िया चीज़ है कि जो इसका फ़ायदा जान गई है वह इसको सीखने को तरसती है।

मनीश्वर—माता जी, जब मैं अच्छा हो जाऊँगा तो मैं भी स्काउट बनूँगा।

यमीरन—अम्मा जी, भैया स्काउट हो जायेंगे तो मुझे भी गर्लगाइड बना देना। क्या आप ऐसा न करेंगी?

खंबाटा देवी—ज़रूर ज़रूर! हम तुम दोनों को स्काउट और गर्लगाइड बना देंगी। मुझे भी आज इसका पता लगा है

मनीश्वर [illegible]

[illegible]

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—गर्लगाइड से तुम क्या समझती हो ?
२—गर्लगाइड और स्काउट में क्या भेद है ?
३—गर्लगाइडों ने किस प्रकार सनीचर प्रसाद की जान बचाई थी ?

३२—रेशम

रेशमी कपड़े सब लोग व्यवहार करते हैं; परन्तु रेशम किस प्रकार बनता है, इसका पूरा हाल बहुत थोड़े लोग जानते हैं। रेशम के बनाने की संक्षिप्त विधि यहाँ लिखी जाती है।

हम लोग अनेक प्रकार के रेशमी वस्त्र व्यवहार करते हैं। वे एक प्रकार के कीड़ों की लार मात्र हैं। इन कीड़ों को इस देश में रेशम का कोया कहते हैं। कोयों की भिन्न जाति के अनुसार इनके शरीर के रंग भी हरे, पीले आदि नाना प्रकार के होते हैं और इन रंगों पर सुनहले आदि नाना प्रकार के चिन्ह होते हैं। पूर्ण अवस्था में कीड़े का शरीर करीब सात आठ इञ्च मोटा और चार पाँच इञ्च लम्बा होता है, किन्तु कोई कोई जाति छुद्र भी होती है। वे बेर, जामुन, पलास, शहतूत इत्यादि अनेक वृक्षों के

निकट के तीन चार पत्तों में जाकर, स्वाभाविक रीति से अपनी नासिका के दोनों छिद्रों से लार निकाल कर, मकड़ी की तरह जाला सा लगाते हुए, पत्तों में घूमने लगते हैं। वायु लगने से वह लार कड़े सूत के समान हो जाती है। इस प्रकार पर्य्यन्त इसी तरह घूम घाम कर, वे अपने वास-स्थान को इतना दृढ़ कर लेते हैं कि पक्षी अपने नखों या चञ्चु द्वारा इसमें छेद नहीं कर सकते। इसी स्थान में कीड़े मकड़ी के जाले की तरह रेशम लगाते हैं। इस स्थान को भी कोया ही कहते हैं। कीड़े इसी जगह में रह कर ऐसी अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं कि पहले आकार से उनका कुछ भी मालूम नहीं रहता। यहाँ तक कि जीवित हैं या नहीं—यह भी सहज ही नहीं ज्ञात हो सकता। यदि वह स्थान दूसरे प्रकार से न काटा जाय तो दो तीन सप्ताह में, भीतर का कीड़ा विचित्र रूप [illegible] तितली का रूप धारण कर, उस स्थान को काट कर बाहर निकल आता है। इसी तरह से कीड़े [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भाँति होता है। दो तीन दिन अंडे देने ही से, सब तितली रूप कीड़े मर जाते हैं और ये ही अंडे उनकी जाति की पुनरुत्पत्ति के कारण होते हैं। इसी प्रकार उक्त कीड़ों का दो तीन मास में जीवन का सारा कार्य शेष हो जाता है। इसकी अवस्थाएँ चार होती हैं—अंडे, कीट, कोया और तितली।

मुर्शिदाबाद, वीरभूमि, वर्द्धवान, भागलपुर, बंगाल तथा बिहार इत्यादि प्रान्त के अनेक स्थानों में रेशम की कोठियाँ हैं। इन कोठियों के लोग प्रायः शहतूत ही के कीड़ों से अधिकांश रेशम प्रस्तुत करते हैं। अतः अपनी कोठी के निकट शहतूत के वृक्ष लगाते हैं। और पूर्वोक्त तितली रूपी कीड़ों से अंडे दिलवा कर उन्हें संग्रह करके रखते हैं। जब उनके फूटने का ठीक समय आता है, तब एक चलनी में शहतूत के पत्ते बिछा कर उसके ऊपर उन अंडों को छोड़ देते हैं। अनन्तर अच्छी तरह गर्मी पाने से कीड़े अंडे फोड़ कर बाहर निकलते हैं। जब कीड़े बहुत ही छोटे रहते हैं, तब शहतूत के पत्तों के छोटे छोटे टुकड़े कर कर चलनी में डालना पड़ता है। जब कीड़े बड़े हो जाते हैं तब शहतूत के पत्तों को काट कर न देने से भी वे खा जाते हैं, किन्तु बड़ी सावधानी

धुल जाता है। किसी रेशम का रंग सफ़ेद भी होता है, पर अधिकांश पीला होता है। रेशम कोमल और टिकाऊ होता है। पाट, सन, सूत आदि की अपेक्षा रेशम अति दृढ़ होता है। रेशम एक अपरिचालक पदार्थ है, इसलिए शीतकाल में धारण करने से जाड़ा नहीं लगता। भारतवर्ष, और चीन रेशम का आदि उत्पत्ति स्थान है। बहुत दिनों से इन देशों में रेशम का व्यवहार प्रचलित है। पूर्व काल के रूमी लोग इस देश से रेशम ले जा कर अपने देश में सुवर्ण के भाव से बेचते थे; परन्तु यूरोपियन लोग इन्हीं कीड़ों को ले जा कर, जब से रेशम अपने देश में उत्पन्न करने लगे हैं, तब से उसका मूल्य पूर्वापेक्षा बहुत ही न्यून हो गया है।

हिन्दू लोग सूत की अपेक्षा रेशम को बहुत पवित्र मानते हैं। सूती धोती एक बार पहनने के बाद बिना धोये फिर नहीं पहनते। पहिन कर उतारी हुई धोती बिना पछारे अपवित्र रहती है, किन्तु रेशमी धोती अनेक बार धारण करके उतार डालने पर अपवित्र नहीं मानी जाती। इसका कारण यह है कि आयुर्वेद में रेशम के विशेष गुण बतलाये गये हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ :—विधि, विस्मित होना और सादृश्य।
२—'अपरिचालक पदार्थ' किसे कहते हैं।
३—'पद' का भिन्न भिन्न अर्थ बताओ।
४—वाक्य बनाओ :—व्यवहार करते हैं, स्वाभाविक रीति से।
५—रेशम की चार अवस्थाएँ कौन कौन सी हैं ?
६—कीड़े से रेशम कैसे निकाला जाता है ?

३३—फूलमती देवी

आश्रम एक बना था सुन्दर
वन में किसी गाँव के पास,
बूढ़े कई साधु रहते थे
उसमें करते भजन-उपास।
आसपास के ग्राम-निवासी
अन्न-वस्त्र फल लाते थे,
हो निश्चिन्त सदा, निज जीवन
बूढ़े साधु बिताते थे ॥ १ ॥

बिना परिश्रम के सुख में जब
उनको रहते दिन बीते,
आलस-भरे हृदय तब उनके
होने लगे प्रकट रीते।
धीरे-धीरे बढ़ी शिथिलता
फिर जीवन ज्यों भार हुआ,
त्यों फूलमती देवी का
आश्रम में अवतार हुआ ॥ २ ॥
श्वेत वस्त्र, फूलों के भूषण
पहने कर में फूल लिये,
दिव्य रूप में सुन्दर दर्शन
देवी ने तत्काल दिये।
देख अलौकिक रूप सामने
हुई साधुओं को आशा,
पूर्ण अवश्य करेगी देवी
इस मन की सुख-अभिलाषा ॥ ३ ॥
सब जन ने बैठे ही बैठे
फूलमती को किया प्रणाम,

दिव्य प्रसाद समझ फूलों को
 सभी माँगने लगे सप्रेम।
किसी किसी ने कर फैलाये
 और किसी ने जोड़े हाथ,
कोई लगा प्रार्थना करने
 किसी किसी ने टेका माथ ॥ ४ ॥
देवी बोली दिल में उनसे
 फूल नहीं तुम पाओगे,
तोड़ो इन्हें अगम्य, आपही
 अपना मरण दिखाओगे।
अपने ही स्वत्व, देने की
 शिक्षा ये हम देते हैं,
सब दुखों को देते हैं,
 आप नहीं कुछ कहते हैं ॥ ५ ॥
[illegible]
 [illegible]
[illegible]
 [illegible]

प्रेम सहित देवी के आगे
कर जोड़े वे रहे खड़े,
दशा साधुओं की लख आँसू
उनकी आँखों से उमड़े ॥ ६ ॥
ग्राम-वासियों की सज्जनता
सदाचार, सेवा, अनुराग,
लखकर फूलमती देवी ने
दी तुरन्त अपनी रिस त्याग।
बड़े प्रेम से उसने उनको
एक-एक वर-फूल दिया;
होकर परम कृतज्ञ उन्होंने
सीस झुका वरदान लिया ॥ ७ ॥
तब देवी ने बड़ी शान्ति से
दिया साधुओं को उपदेश,
अपने सुख के लिए किसी को
उचित नहीं है देना क्लेश।
रोगी, दुखी, दीन, दुष्टों को
औषधि, धीरज, आश्रय, सीख,

कर्म, वचन, मन से देकर ही
लेना तुम साधारण भीख ॥ ८ ॥

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—अन्न-उपास, शिथिलता तत्काल, अलौकिक, भक्तिभाव और सदाचार।
२—फूलमती देवी ने साधुओं को क्या उपदेश दिया था ?
३—देवी ग्रामवासियों से क्यों प्रसन्न और साधुओं से क्यों अप्रसन्न हुई ।
४—आठवें छन्द का अर्थ बताओ।
५—' कर ' के भिन्न भिन्न अर्थ बताओ।

३४—वायु-यान

पुष्पक विमान पर चढ़ कर राम लङ्का से अयोध्या आये थे, यह कथा आज से पचीस तीस वर्ष पूर्व स्वप्न की सी बात प्रतीत होती थी। किन्तु, आज घरघराते हुए हवाई जहाज़ जब हमारी नज़रों के ऊपर मड़राते हैं तब हमें वह स्वप्न प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। विज्ञान की माया विचित्र है। कुछ वर्ष पूर्व, लोग जिन बातों पर हँसते थे, आज वे हमारे दैनिक जीवन का अङ्ग हो रही हैं।

हुआ। अग्निबोट की तरह इन गुब्बारों का मोटर मशीन से चलाना संभव हो गया। जर्मनी के काउन्ट जैपलिन नामक व्यक्ति ने यह आविष्कार किया और उसी के नाम पर ये वायु-पोत 'जैपलिन' के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा जल-पोतों की भाँति चलने लगे। जर्मन-महायुद्ध में इनसे काम लिया गया था। परन्तु, ये वायु-पोत वायु-यान नहीं कहे जा सकते।

वायु-यान की बात ही और है। गुब्बारे और वायु-पोत हवा से हल्की चीज़ हैं, और वे हवा में हाइड्रोजन गैस के सहारे उड़ते हैं। परन्तु वायु-यान हवा से भारी पदार्थ है और यह मशीन के बल से हवा को चीरता हुआ जाता है। यही दोनों में अन्तर है। वायु-यान वास्तव में हवा में उड़ने वाली मशीन है।

वायु-यानों की करामात हम अपनी आँखों देख ही रहे हैं। जिस पृथ्वी की प्रदक्षिणा की कल्पना भी कठिन थी, वह इन वायु-यानों ने प्रत्यक्ष करके दिखा दी। अटलांटिक महासागर को कितने ही उड़ाके पार कर चुके। करांची से लंदन को डाक इन्हीं के द्वारा जाने लगी है। देश विदेशों का अन्तर अब कुछ दिनों का सफर रह गया। भारत से इंग्लैंड जाने में अब केवल पाँच दिन लगते हैं

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—इन शब्दों के अर्थ बताओ—आविष्कार, प्र
विप्लव, भविष्य और विश्वव्यापी।

२—हाइड्रोजन के भरने से गुब्बारा क्यों उड़ने लगता

३—'जेपलिन' कौन थे ? इनके सम्बन्ध में तुम क्या
हो ?

२५—शरद-ऋतु-वर्णन

चौपाई

वर्षा विगत शरद ऋतु आई।
लछमन देखहु परम सुहाई॥
फूले कास सकल महि छाई।
जनु वर्षा कृत प्रगट बुढ़ाई॥
उदित अगस्त पन्थ जल सोखा।
जिमि लोभहि सोखै सन्तोषा
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

जनि शरद-ऋतु खंजन आये।
पाय समय जिमि सुकृत सुहाये॥
पंक न रेणु सोह अस धरनी।
नीति-निपुण नृप की जस करनी॥
जल संकोच विकल भये मीना।
विविध कुटुम्बी जिमि धन-हीना॥
बिन घन निर्मल सोह अकाशा।
जिमि हरिजन परिहरि सब आशा॥
कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी।
कोउ एक पाव भक्ति जिमि मोरी॥

दोहा

चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बणिक भिखारि।
जिमि हरि भक्तिहि पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि॥

चौपाई

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा।
जिमि हरि शरण न एकौ बाधा॥
फूले कमल सोह सर कैसे।
निर्गुन ब्रह्म सगुण भये जैसे॥

गुञ्जत मधुकर निकर अनूपा।
सुन्दर खगरव नाना रूपा॥
चकवाक मन दुख निशि पेखी।
जिमि दुर्जन पर-सम्पत्ति देखी॥
चातक रटत तृषा अति ओही।
जिमि सुख लहै न शंकर द्रोही॥
शरद ताप निशि शशि अपहरई।
सन्त दरस जिमि पातक टरई॥
देखहिं विधु चकोर समुदाई।
चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई॥
मशक दंश बीते हिम त्रासा।
जिमि द्विज द्रोह किये कुल नाशा॥

४—सतगुरु, हरिजन, सरित-सर, मधुकर और निर्मल शब्द के समास लिखो।

५—शरद्-ऋतु का वर्णन अपनी भाषा में करो।

६—अन्तिम दोहे का अर्थ बताओ।

३६—मेरी कैलाश-यात्रा

अल्मोड़ा से कैलाश की ओर जाने के पहले बागेश्वर आता है। मैं कई साथियों के साथ अल्मोड़े से चलता हुआ, पहाड़ी दृश्य देखता हुआ, पहाड़ी नालों की गड़-गड़ सुनता हुआ आनन्द में जा रहा था। हम कहीं नाले के किनारे-किनारे जा रहे हैं, कहीं गिरे हुए वृक्षों के ठण्डे मार्ग से, कहीं दोनों ओर लम्बे-लम्बे चीड़ के वृक्षों की सर-सर ध्वनि सुनाई देती है, कहीं बिल्कुल नीचे की ओर उतर रहे हैं, कहीं थोड़ा चढ़ाव है। दस बजे के लगभग एक ऊँची चढ़ाई के पास पहुँचे। यहाँ से डेढ़ मील विकट चढ़ाई है। धीरे-धीरे कई जगह दम लेते हुए पहाड़ के ऊपर पहुँचे और उस चढ़ाई को पार किया। मार्ग में पसीने से [illegible] जब चढ़ाई समाप्त हुई तब ठंडे पानी [illegible] दम लिया, और जल पिया, [illegible] था, वाह! यहाँ से

फिर दो-एक लोगों को साथ लिया और बड़े विकट रास्ते को पार करके बागेश्वर पहुँचे। बागेश्वर में सरयू नदी का दृश्य दिखला कर वहाँ की कुछ बात बतलाता हूँ। दोनों ओर दूर तक लम्बी, ऊंची, हरी-हरी पहाड़ियों के बीच चौरस घाटी में आप अपने आपको खड़ा हुआ समझिए। इसी घाटी के बीच पत्थरों को रगड़ती हुई सरयू नदी बह रही है। पिता हिमालय की गोद से निकल कर अपनी सहचरियों के साथ टेढ़े मेढ़े चक्कर काटती हुई सरयू कल्यानी चाल से बागेश्वर में पहुँचती है। यहाँ पश्चिम से आने वाली अपनी बहिन गोमती के स्वागत के लिए वह अपनी चाल धीमी कर, बड़े प्रेम से उसकी ओर निहारती है। फिर वेग से आगे बढ़ कर भगिनी का मुख चूमती है। अहा! क्या सुन्दर दृश्य है सामने निकट ही पश्चिम की ओर पीठ कर खड़े होने से सामने निकट ही चण्डी पर्वत के दर्शन होते हैं। इसके ऊपर चण्डी महारानी का मन्दिर है। पीछे पश्चिम में नील पर्वत अपनी छटा दिखलाता है। इस पर भगवान नीलेश्वर विराजमान हैं। पूर्व में [illegible] है [illegible] सरयू जी का संगम हुआ है [illegible] और सरयू [illegible] कर वहाँ [illegible] से [illegible]

वहाँ सङ्गम पर बाँधनाथ जी का प्राचीन-मन्दिर है। यहाँ मकर संक्रान्ति का जनवरी में बड़ा भारी मेला होता है। बागेश्वर सरयू जी के दोनों किनारों पर बसा है। दोनों किनारों पर आमने-सामने दूकानें हैं। दो पुल बने हैं; एक गोमती पर, दूसरा सरयू पर। बागेश्वर में पुल के पास ऊँचे पत्थर पर बैठ कर मैंने सरयू जी की छटा देखी, स्नान का बड़ा आनन्द आया। बागेश्वर में तीन दिन रहा। सरयू जी का स्नान नहीं भूलेगा। अवध-वासियों को चाहिए कि बागेश्वर में जाकर सरयू का विचित्र आनन्द लूटें। इधर की छटा ही निराली है। जून ११, सोमवार को सबेरे छः बजे के बाद बागेश्वर से चला। मेरे प्रेमियों ने मेरा सामान-बिस्तरा और फलों की थैली उठाने के लिए कुली खोज दिया था। मैंने सब से वन्दे कहा; फिर छतरी कमण्डल लाठी उठा सड़क पर हो लिया। इतने में ही घनघोर घटा छा गई, वर्षा होने लगी। सरयू जी का पहाड़ी राग सुनते जा रहे थे। मार्ग बुरा है, कहीं नदी के किनारे-किनारे, कहीं दूर होकर गया है। वर्षा से सड़क और भी बिगड़ गई है। भागते-भागते सात मील पूरे किये, और कपिकोट पहुँचे। कपिकोट से सबेरे दुग्ध पान करके चला। दोनों साधु कार्यस्थान पीछे रह

गये। कुछ सज्जन दूर तक पहुँचाने के लिए साथ आये। सरयू के किनारे-किनारे प्रकृति माता के दृश्यों का आनन्द लेता हुआ मैं चला। कपिकोट से तीन मील तक सरयू-घाटी का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। हरित पहाड़ियों पर गाय-बकरी चर रहे थे, किनारे-किनारे जहाँ घाटी चौड़ी हो गई है भूमि घास से लदी हुई बड़ी सुहावनी देख पड़ती है। नदी का पाट चौड़ा है, पर जल कम है क्योंकि अभी वर्षा आरम्भ नहीं हुई थी। आकाश निर्मल था। आनन्द में मग्न मैं चला जा रहा था। सामने गाय-भैंस रास्ते में खड़ी थीं। उनके साथ मैले, कुचैले कपड़े पहने हुए चरवाहे भी थे। लाठी से मैंने अपने लिये रास्ता किया। गायें बहुत छोटी-छोटी थीं, और चरवाहे भी वैसे ही थे। ऐसे सुन्दर सुहावने जल-वायु में इनकी ऐसी दुर्दशा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

गायें इधर की आध सेर, तीन पाव दूध देती हैं, और छोटी होती हैं। हिमालय की [illegible] इनकी नन्दिनी भी देखी हो, परन्तु पहाड़ी मनुष्य [illegible] ने इन पर प्रभाव डाला है। [illegible] पहाड़ी लोग, बीमारी और [illegible] पहाड़ियों के इन गुणों का मुख्य [illegible] है। [illegible]

दासत्व ने इनका मनुष्यत्व नष्ट कर दिया है। दासता इनकी मुखाकृति पर झलक रही है। पर सरयू अपनी उसी पुरानी चाल से अपने उसी यौवन-मद में लड़ती-झगड़ती जा रही है। उसको अपने काम से काम है। सड़क के किनारे-किनारे ठंडे सोतों का जल यात्री की प्यास को दूर करता है। तीन मील पूरे हो गये। सरयू जी की घाटी छोड़ कर जोहार का रास्ता पकड़ा। यहाँ दो पथ हैं, एक पिंडारी ग्लेशियर को जाता है, दूसरा कैलास की ओर गया है। मैं और मेरा कुली दाहिने रास्ते हो लिये। नाले के किनारे-किनारे चले। यहाँ पर मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि पानी सभ्यता-प्रचार करने वाला बड़ा भारी इञ्जीनियर है। पहाड़ों को काट कर रास्ता बनाने वाला और सभ्यता फैलाने वाला जल है। कैसे कैसे पर्वतों को इसने काटा है, कहाँ की मिट्टी ला कर यह खेत बनाता है। दुर्गम हिमालय में मार्ग बनाना इसी का काम है। नाले के किनारे-किनारे सुन्दर सड़क बनी हुई है। बादल आ जाने से ठंडा हो गया था छोटे छोटे दस-पाँच घरों के ग्राम कई देखने में आये। स्थान स्थान पर हरे धान लहलहा रहे थे। जहाँ थोड़ी सी भूमि मिली वहीं खेती कर लेते हैं। बेचारे इसी पहाड़ी पर जीवन

निर्वाह करते हैं। आज जुराब पहन कर नहीं चला था, इसलिये मच्छरों ने कष्ट दिया। यात्री को चाहिए कि कपिकोट से जुराबें पहन ले। जुराबें घुटनों तक हों। दो चार साथियों के साथ यात्रा करें तो अच्छा है, क्योंकि आजकल यह रास्ता बहुत कम चलता है। कोई पथिक रास्ते में नहीं मिलता, इसलिए उन बन्धुओं को जो नगर में रहने वाले हैं, ऐसे निर्जन पथ में भय लगेगा। यद्यपि डर किसी जीव-जन्तु का नहीं, और न लूटखसूट ही का भय है, पर दृश्य बड़े वन्य हैं। यहाँ एकान्त शब्द की सार्थकता बोध होने लगती है, और नास्तिक आस्तिक बनने की इच्छा करने लगता है।

नौ मील चल कर चढ़ाई मिली। धीरे-धीरे पग-पग चढ़ना आरंभ किया। थोड़ी दूर चढ़ना तो थक जाना। किसी प्रकार इन दोनों मीलों को पूरा किया। शामाधुर के निकट पहुँचे। स्वागत के लिए दो सज्जन आगे से आये थे। बड़े प्रेम से ले गये, और अपनी [illegible] सेवा की। अहा! [illegible] यात्रा पूर्ण होने पर [illegible] और धीरे-धीरे [illegible]

पैदल चला जाता, मगर मंज़िल पूरी होने पर न ठहरने का ठिकाना, न खाने का प्रबन्ध, न पैसा पास। वे दिन कैसे कटे थे, कभी भूलने वाले नहीं। डेढ़ घण्टे बाद उदासी साधु भी पहुँच गया। स्नान किया, पत्र लिखे, कुछ विश्राम किया। चरसीनाथ भी धीरे-धीरे आ पहुँचा। ये दोनों महाशय थे निरे मूर्ख, काला अक्षर भैंस बराबर था। चरसीनाथ तो अवस्था में बड़ा होने के कारण कुछ सभ्य भी था, उसे कुछ सत्सङ्ग भी हो चुका था, पर उदासी साधु तो निरा गँवार पंजाबी जाट था। सिवाय खाने-पीने की बात के दूसरी चर्चा न थी। मैंने आज उसे देव-नागरी वर्णमाला के पहले छः अक्षर सिखाये। उसकी आवाज़ अच्छी, मीठी थी। इसलिए मैंने चाहा कि कुछ देश-हित-सम्बन्धी भजन सिखा कर उससे काम लिया जावे, पर उसकी स्मरण-शक्ति बड़ी ही ख़राब थी। वह भजन कंठ नहीं कर सकता था। दो घण्टा सिर खपा कर हार कर मैंने उसे छोड़ दिया। क्या करता! थके हुए पानी से पत्थर में छेद नहीं हो सकता था। रात को अच्छी तरह नींद नहीं आई। जहाँ मैं सोया था वहाँ बहुत से चूहे आकर कबड्डी खेलने लगे। उनको मैंने बहुतेरा मना किया, पर वे मूसरचन्द कब मानने वाले थे।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—[illegible] के मार्ग का वर्णन करो।

२—बद्रीनाथ का मन्दिर कहाँ है? वहाँ का कुछ हाल लिखो।

३—पर्वत-प्रान्त के गाँवों की दशा का चित्र खींचो।

४—अर्थ लिखो और लिखने का अभ्यास करो:—

चट्टानों, हृदय, आश्चर्य, स्वतन्त्रता, इञ्जीनियर, दुर्गम, नास्तिक, आस्तिक।

५—वाक्यों में इनका प्रयोग करो:—

दम लेते हुए, टेढ़े मेढ़े, सर्वथा अभाव है, रास्ता पकड़ा, ताज़ा मटर सेम बराबर, सिर झुका कर, मूसरचन्द।

३५-फूलों की घाटी

(२)

बूँद उन पर है बरसता एक सा।
एक सी उन पर हवायें हैं बहीं॥
पर सदा ही यह दिखाता है हमें।
ढंग उनके एक से होते नहीं॥

(३)

छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ।
फाड़ देता है किसी का वर वसन॥
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर।
भौंर का है वेध देता श्यामतन॥

(४)

फूल लेकर तितलियों को गोद में।
भौंर को अपना अनूठा रस पिला॥
निज सुगंधों औ निराले रंग से।
है सदा देता कली जी की खिला॥

(५)

है खटकता एक सबकी आँख में।
दूसरा है सोहता सुर सीस पर॥

जिस तरह कुल की बड़ाई काम दे।
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर॥

अभ्यास के लिए प्रश्न

१—लोग फूल से प्रेम और काँटे से घृणा क्यों करते हैं?

२—धमक, श्यामतन, अनूठा, सुर-सीस, कसर और मौर का अर्थ बताओ।

३—'आँख में खटकता है' और 'जी की कली खिला देता है' का वाक्यों में प्रयोग करो।

३८—देवी द्रौपदी

[महाभारत का युद्ध समाप्त होने पर भीम और दुर्योधन के बीच एक गदा युद्ध हुआ जिसमें गदा की चोटों से दुर्योधन का पैर टूट गया। दुर्योधन की ऐसी हालत देख अश्वत्थामा ने पाँचों [illegible]

[illegible]

से जकड़ा हुआ अश्वत्थामा अकड़ कर खड़ा है। उसके अगल-बगल क्रुद्ध भीम और अर्जुन सशस्त्र सावधानी से खड़े हुए हैं। कुछ सहकारी सचिव-सेवकों के वहाँ आ जाने पर युधिष्ठिर धीरता से बोले—

युधि०—गुरु-पुत्र अश्वत्थामा, आपने निरपराध बालकों का वध क्यों किया और—

भीम—(बात काटकर) इस दुष्ट को—राक्षस को आप अब भी गुरु-पुत्र कह रहे हैं ?

अश्व०—बालक निरपराध थे ही, मैं भी निरपराध हूँ।

युधि०—आप भी निरपराध हैं ? यह कैसे ?

अश्व०—अपने पिता के घातक, पाण्डवों का वध करने के लिए ही मैं आया था, उन बालकों के लिए नहीं।

युधि०—क्या सोते हुए मनुष्यों का वध करना अन्याय नहीं है।

अश्व०—अन्याय है, घोर अन्याय है।

युधि०—फिर जान-बूझकर आपने अन्याय क्यों किया ? इसका क्या उत्तर है ?

अश्व०—अन्यायियों के साथ अन्याय करना अनुचित नहीं होता है।

युधि०—इन बालकों ने क्या अन्याय किया था ?

अश्व०—तुम लोगों ने तो किया था ?

युधि०—हम लोगों ने क्या अन्याय किया ?

अश्व०—मेरे पूज्य पिता का वध छल के साथ क्या आप लोगों द्वारा नहीं हुआ था ?

युधि०—आपके साथ हम लोगों ने क्या किया ?

अश्व०—पिता-पुत्र में विशेष भेद नहीं होता। दूसरे यह कि मेरे ही लिए पूज्य पिता जी ने शस्त्र त्याग किया था।

भीम—अरे दुष्ट, मुझसे बातें कर। अब तो तू बँधा हुआ है। तेरी क्या दुर्गति करूँ ?

अश्व०—मूर्ख, भीम, न मैं बँधा हूँ, न मेरी दुर्गत करने वाला संसार में कोई उत्पन्न हुआ है।

भीम—और बँधा कौन है ?

अश्व०—मेरी देह, मूढ़ ! मुझे और मेरे दृढ़ विचार को अपने वश में करने वाला कौन है ?

अर्जुन—द्रौपदी, इस अपराधी को पकड़ने में मुझे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा है। घोर युद्ध करने पर ही यह पकड़ा गया है। मैं चाहता हूँ, इसका सिर तुम्हारी आँखों के सामने बिना विलम्ब काटकर रख दूँ, जिससे तुम्हारी [illegible] छाती [illegible] शीतल हो जाय

द्रौपदी—आपने धनुर्वेद किससे पढ़ा और शस्त्र-विद्या किससे सीखी ?

अर्जुन—गुरुवर द्रोणाचार्य से।

द्रौपदी—आर्यपुत्र, गुरु के समान गुरुपुत्र भी कहा गया है। राज्य के लोभ में पड़कर या कौरवों के अत्याचार के कारण लोक-मान्य द्रोणाचार्य की हत्या, जो धर्म की दृष्टि से अनुचित है, आप लोगों की सहायता से मेरे भाई ने की है। वही बहुत है। अब गुरु-पुत्र का भी वध करना महा अन्याय और पाप होगा।

भीम—द्रौपदी, जब गुरु के समान गुरु पुत्र भी है, तो जो गति गुरु की हुई, वही गुरु पुत्र की भी होनी चाहिए।

अर्जुन—(भीम से) आप तनिक ठहर जाइए। हाँ द्रौपदी, तो क्या अश्वत्थामा छोड़ दिया जाय ?

भीम—अर्जुन, द्रौपदी की सम्मति की क्या आवश्यकता है ? यहाँ तो मैं अपनी गदा से इसके सिर को चकनाचूर कर दूँ।

द्रौपदी—(अर्जुन से) आर्यपुत्र ! क्या आपको अपने पुत्रों के मारे जाने का कुछ शोक है ?

अर्जुन—अत्यन्त।

द्रौपदी—अश्वत्थामा के वध से आपके पुत्र जी सकते हैं ?

अर्जुन—कदापि नहीं।

द्रौपदी—तो फिर गुरु-पत्नी को पुत्र-शोक देने से क्या लाभ ? पुत्र-शोक कैसा होता है, इसका अनुभव हम लोगों को हो रहा है।

अर्जुन—फिर जैसी तुम्हारी सम्मति हो।

द्रौपदी—गुरु-पत्नी के पति-शोक से भरे हुए हृदय को अब पुत्र शोक न दिया जाय।

अर्जुन—स्पष्ट कहो। क्या अश्वत्थामा को छोड़ दूँ ?

द्रौपदी—अवश्य।

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—अश्वत्थामा ने अपने को निरपराध कैसे प्रमाणित करना चाहा ? क्या उसका प्रमाण ठीक था ?

२—भीम और अर्जुन अश्वत्थामा के साथ कैसा बर्ताव करना चाहते थे और द्रौपदी [illegible]

३—द्रौपदी ने अश्वत्थामा के [illegible] पूर्ति निकाली थी ? [illegible] करो।

[पाठ की सहायता—अध्यापिका को चाहिये कि विद्यार्थिनियों को महाभारत की कहानी संक्षेप में बता दें और साथ ही द्रौपदी के साथ जो अत्याचार हुआ था उसका भी वर्णन करते हुए अश्वत्थामा को छुड़ा कर द्रौपदी ने जो अपने चरित्र की महानता दिखाई है उसे भी विद्यार्थिनियों को अच्छी तरह समझा दें ।]

३६—रसोई बनाना

रसोई बनाना प्रायः सभी स्त्रियाँ जानती हैं परन्तु दुःख की बात है कि जिस तरह रसोई बनानी चाहिए और अपने कुटुम्बी लोग को भोजन कराना चाहिए यह बहुत कम स्त्रियाँ जानती हैं। साधारण मनुष्यों की स्त्रियाँ तो भला कच्चा-पक्का किसी तरह बना कर अपने परिवार वालों को भोजन कराती भी हैं परन्तु आज-कल अमीरों के घरों की स्त्रियाँ रसोई बनाने को बहुत ही बुरा समझती हैं। उनके घरों में रसोई बनाने के लिए कोई स्त्री या पुरुष नौकर रक्खा जाता है। धार्मिक पुस्तकों में जो स्त्री के कर्त्तव्य बताये गये हैं उनमें रसोई बनाना एक प्रधान कर्त्तव्य है। जिस स्त्री में यह गुण नहीं उसकी शोभा नहीं और उसके घर में कभी

आनन्द भी नहीं। यही नहीं किसी समय उसे बड़ा दुःख उठाना पड़ता है। समय पड़ने पर यदि उसे घर का कोई कार्य करना पड़ता है तो बड़ी तकलीफ़ होती है। बस बात बात में रोया करती हैं। इसलिए स्त्रियों को उचित है कि घर में चाहे कितने ही नौकर-चाकर भरे हों परन्तु रसोई और परिवार का भोजन अपने ही हाथ से बनायें तो बहुत ही अच्छा हो। जो स्त्रियाँ अपने हाथ से बनाना नहीं जानतीं उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार भोजन नहीं मिलता। दूसरे के हाथ का कच्चा पक्का या जला भोजन नसीब होता है। भोजन बनाने का भार स्त्रियों पर ही रहना अच्छा है। अपने देश के समान यह विद्या और कहीं नहीं है। छः रस, छत्तीस व्यंजन और छप्पन भोजनों का बनाना यही देश जानता है।

जैसा अच्छा भोजन अपने हाथ का होता है वैसा दूसरे के हाथ का नहीं होता। पहले सब पदार्थ घर पर ही बनाये जाते थे; परन्तु ज्यों ज्यों स्त्रियाँ आलसी होती गईं त्यों ही त्यों इस विद्या का लोप होता गया। अब लोग जहाँ किसी भी चीज़ का मन चला चट बाज़ार से जाकर ख़रीद लाये, विवाह शादी में हलवाई बुलाकर बनवा लिया। परन्तु बाजार की चीज़ों में न तो वह स्वाद ही होता है न वे लोग पवित्रता से बनाते ही हैं।

होली की मिठाई की अपेक्षा इस कटु-पत्र की बातों पर विचार करने और उस पर अमल करने से कहीं अधिक समय तक, तुम्हारा जीवन आनन्दमय रहेगा। यही सोच कर मैं तुमको आज होली की मामूली मिठाई न भेज कर, इस महत्त्व-पूर्ण, सदा सुख पहुँचाने वाली उपदेश की अपूर्व कड़ुवी चीज़ भेज रही हूँ। बेटी! ससुराल के बड़े बूढ़े लोग बहू की हर बात को टोकते रहते हैं परन्तु इससे क्या उनका मतलब दूसरे की लड़की के निरर्थक सताने का होता है? एक बार तुमने मेरे पास ससुराल के आदमियों की शिकायत की थी उसी समय मेरा विचार था कि तुम्हें दो एक बातें इस विषय में समझा दूँ, परन्तु अकस्मात् तुम्हारी ससुराल जाने की तैयारी हो गई और मेरा वह विचार मन ही में रह गया।

बेटी! अपने ससुराल वालों की शिकायत लिखना या किसी के द्वारा कहला भेजना, तुम्हारी समान सुशीला कन्या के लिए बहुत अनुचित बात है। जिस घर में तुम्हें अपना जन्म बिताना है, जिस घर की भलाई-बुराई में तुम्हारी भलाई-बुराई है उस घर की अथवा उस घर के आदमियों की छोटी छोटी बातों के लिए निन्दा करना बहुत अनुचित बात है तुम तनिक सोचो तो कि बिना कारण

तुम पर वे क्रोध क्यों करेंगे, क्या तुम्हारा और उनका पूर्व जन्म का कुछ वैर है ? बेटी, तुम इस कल्पना को भी अपने मन में मत आने दो।

"सास बुरी होती है, जेठानी लड़ाकी होती है और ननंद काम में बुराई या ऐब ढूँढा करती है" तुम्हारी अज्ञान लड़कियों की सी जो यह समझ हो गई है, यह बड़ी बुरी बात है। तुम लिखती हो कि "चूल्हे पर दूध रख कर सास बाहर गई कि इतने में बिल्ली ने दूध लुढ़का दिया, इस पर सास मुझसे नाराज़ हुई।" बेटी! दूध का नुक़सान होने से क्रोध का आना एक सहज बात है और उस क्रोध में कुछ का कुछ कह जाना भी स्वाभाविक बात है। इस पर तुम्हें बुरा मानना और शिकायत करना उचित न था। तुम्हारी यह बात मुझे बिल्कुल पसन्द न आई। घर की बात के बाहर जाने से घर की शोभा जाती रहती है। तुमने स्वयम् सास की चुगली करने वाली एक लड़की का बुरा हाल मुझसे बताया था ?

यदि ऐसा ही बर्ताव मैं रखती तो मेरा निबाह कैसे होता ? मुझे भी मेरी सास कुछ बिगड़ने पर बातें कहा करती थीं। बहू के अपराध पर सास का बोलना एक स्वाभाविक बात है। सास माँ के तुल्य होती है। क्या मैं तुमसे

काम बिगड़ने पर कुछ न कहती थी ? कल जब तुम्हारे बहू आवेगी और जब तुम्हें मालूम होगा कि मेरी बहू ने मेरी शिकायत किसी से की है तो तुम्हें कैसा बुरा मालूम होगा ? मेरी चिट्ठी पढ़ कर तुम्हें दुःख होगा यह मैं जानती हूँ, परन्तु भावी परिणाम की ओर विचार करके ही मुझे ऐसा लिखना पड़ा।

बेटी ! तुम्हारी चिट्ठी पढ़ कर यदि मैं चुप बैठ जाती तो इससे तीन प्रकार की हानियाँ होतीं। पहली हानि तो यह होती कि तुम्हें सास की शिकायत करने में उत्तेजना मिलती। दूसरी यह कि सास बहू से द्वेष रखती है, तुम्हारी इस बात की पुष्टि होती और सब से बड़ी हानि यह होती कि तुम्हारा उनकी ओर से मन मलीन होता जाता और आगे यह सम्भव था कि तुम उनकी बातों का उत्तर भी देने लगतीं। इसका परिणाम यह होता कि सास का चित्त तुमसे हट जाता. ऐसा होना तुम्हारे लिए लाभ-दायक न होता। कोई कुछ कहे उसे बर्दाश्त न करना, किसी के सहज बोलने पर भी उसे कटु उत्तर देना, स्वभाव में सहनशीलता न रखना, ये अवगुण हर एक के लिए लांछनास्पद है। ये सब अवगुण स्त्रियों को तो धूल में ही मिला देते है।

बेटी ! तुम ही सोचो कि उत्तर-प्रत्युत्तर देने की आदत कितनी बुरी होती है। आज तुमने सास को उत्तर दिया तो कल जिसके साथ तुम्हें अपना जीवन व्यतीत करना है उस पति को भी तुम उत्तर देने में न चूकोगी। स्त्री में यदि सहन-शीलता न हो तो कुटुम्ब में किसी को सुख नहीं मिलता। इस पर यदि पति भी क्रोधी हो तो फिर पूछना ही क्या है ? रोज़ लड़ाई, रोज़ झगड़ा।

तुम्हारे समान समझदार लड़कियों को इन बातों की बहुत खबरदारी रखनी चाहिए, तुमने अपनी चिट्ठी में लिखा है कि घर में कुछ भूल होते ही या कुछ काम बिगड़ते ही सास कहने लगती है—"यह तो स्कूल की पढ़ी लड़की है, इसे काम-काज से क्या, किताबें पढ़ कर अमर्यादित बर्ताव करना ही इसका कर्त्तव्य है।" पढ़ी लिखी लड़कियों को ऐसा कहलाने का मौक़ा ही न आने देना चाहिए पढ़ना-लिखना इसीलिए होता है कि लड़कियाँ जब अपनी ससुराल में जावें तब वहाँ अपनी विद्या और बुद्धि के प्रभाव से सास ससुर, जेठ, जिठानी, पति और अन्य घर वालों को प्रसन्न रक्खें, उनकी आज्ञाओं का पालन करें, उन्हें सुख पहुँचावें। यदि यह काम उनसे न हुआ तो उनका लिखना ही व्यर्थ है। इसलिए बेटी तुम्हारा कर्त्तव्य है कि

तुम ऐसा अवसर कभी न आने दो, जिससे लोग तुम सरीखी लिखी पढ़ी लड़कियों की ओर अँगुली उठा सकें। घर का काम तुम ध्यान-पूर्वक करो उसमें कोई गलती न होने दो।

बेटी! अब इन सब बातों के सोचने योग्य तुम्हारी उमर हो गई है और इसी कारण मैं इन्हें लिख भी रही हूँ। मैंने जो कुछ चिट्ठी में लिखा है उसके एक एक शब्द को ध्यान पूर्वक पढ़ना और उसी के अनुकूल आचरण करना। एक बात बिना लिखे मेरा मन नहीं मानता और वह यह है कि बुरी संगति और अवगुणों से सदा बचना क्योंकि लड़कियों पर बुरी संगति का प्रभाव बहुत जल्द पड़ता है, तुम लोग अवगुणों को बहुत जल्द ग्रहण कर लेती हो। ईश्वर करे तुम सदा प्रसन्न और सुखी रहो।

तुम्हारी माता
सुशीला

अभ्यास के लिये प्रश्न

१—स्त्रियों का व्यवहार अपने सास-ससुर एवं अन्य परिजनों के साथ कैसा होना चाहिए

२—पढ़ी लिखी लड़कियों का क्या कर्त्तव्य है ?

३—इस पाठ की शिक्षाओं को संक्षेप में लिखो।

४—निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो।

सहृदय, कल्पना, महत्व-पूर्ण, उत्तेजना, हाहाकार।